ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

गुरमति ज्ञान

(धर्म प्रचार कमेटी का मासिक पत्र)

वैसाख-ज्येष्ठ, संवत् नानकशाही ५४१

मई 2009 वर्ष २ अंक ९

संपादक
सिमरजीत सिंघ
एम. ए, एम. एम. सी.

सहायक संपादक
सुरिंदर सिंघ निमाणा
एम. ए (हिंदी, पंजाबी), बी. एड.

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव
धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६

फोन : 0183-2553956-57-58-59

एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग **303**
संपादन विभाग **304**

फैक्स : 0183-2553919

e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

पत्रिका प्राप्त न होने पर तथा चंदे आदि सम्बंधी जानकारी प्राप्त करने के लिए मोबाइल नं. 98886-38618 पर भी सम्पर्क किया जा सकता है।

विषय-सूची

गुरबाणी विचार

हरि जेठि जुड़ंदा लोड़ीऐ जिसु अगै सभि निवंनि ॥
हरि सजण दावणि लगिआ किसै न देई बंनि ॥
माणक मोती नामु प्रभ उन लगै नाही संनि ॥
रंग सभे नाराइणै जेते मनि भावंनि ॥
जो हरि लोड़े सो करे सोई जीअ करंनि ॥
जो प्रभि कीते आपणे सेई कहीअहि धंनि ॥
आपण लीआ जे मिलै विछुड़ि किउ रोवंनि ॥
साधू संगु परापते नानक रंग माणंनि ॥
हरि जेठु रंगीला तिसु धणी जिस कै भागु मथंनि ॥४॥ *(पन्ना १३४)*

पंचम पातशाह बारह माहा मांझ की इस पावन पउड़ी में ज्येष्ठ मास की ऋतु, वातावरण और इस मास में की जाने वाली जीव-जगत की क्रियाओं की पृष्ठभूमि में मनुष्य जीवन रूपी वर्ष के इस खंड को प्रभु-नाम के व्यक्तिगत मनन और सामूहिक अथवा संगती विचार द्वारा सफल करने का सुमार्ग बख्शिश करते हैं।

गुरु जी फरमान करते हैं कि ज्येष्ठ मास में उस परमात्मा से अथवा उसके नाम से जुड़ना चाहिए जिस परमात्मा के समक्ष सभी झुकते हैं अथवा जो सर्वशक्तिमान है। परमात्मा ऐसा मित्र है जिसका दामन पकड़ने से जीव को कोई बांध नहीं सकता भाव यमों या मृत्यु का भय हमको भयभीत नहीं करता।

गुरु जी कथन करते हैं कि सांसारिक लोग प्राय: मोतियों को प्राप्त करना चाहते हैं और प्राप्त करके फिर वे इस संशस्य में चिंतित रहते हैं कि कहीं इस अमूल्य मोती को कोई चोर चुराकर न ले जाए, परंतु परमात्मा का पावन नाम ही एक ऐसा विशेष मोती है जिसको कोई चोरी नहीं कर सकता भाव मनुष्य को नाम का धारक बन कर सदीवी सुख आनंद मिलता है। जितने भी रंग हमको अच्छे लगते हैं वे सब उस परमात्मा के ही रंग हैं। परमात्मा की महान इच्छा ही सभी ओर बरतती है। सभी जीव वही करते हैं जो उस परमात्मा को अच्छा लगता है। जिन जीवों को परमात्मा ने अपना बना लिया है भाव जो जीव उसकी सच्ची स्तुति में लगे हैं उनको शाबाश कहो। मात्र निज प्रयास से (यदि परमात्मा की इच्छा न हो) तो कुछ भी नहीं होता। यदि ऐसा संभव हो सकता तो कोई भी जीव न प्रभु-नाम से बिछुड़ता, न ही दुखी होता।

सतिगुरु जी फरमान करते हैं कि जिनको साधू अथवा सतिगुरु का साथ मिल जाए वे आनंद-प्रसन्न रहते हैं। जिस मनुष्य के मस्तक के भाग्य जागृत हो जाते हैं उनको ज्येष्ठ का ऊष्ण एवं शुष्क मास भी रंग-आनंद से भरपूर लगता है।

संपादकीय

अधिकारों और कर्त्तव्यों पर विचार, मजदूर दिवस की पुकार

किरत अथवा श्रम व्यक्तिगत रूप में मनुष्य-मात्र के जीवन-यापन का मूल आधार है। इससे आगे सामूहिक अथवा सामाजिक स्तर पर किरत मानवी समाज के अस्तित्व तथा उसके विकास का भी मूल आधार है। इसमें तनिक भी अतिश्योक्ति नहीं कि किसी समाज, देश व राष्ट्र की प्रगति में किरत ही मुख्य भूमिका निभाती है। यह कहना/लिखना पूर्णत: सत्य है कि यह सारा संसार किरत के मूल आधार पर ही चल रहा है। जितना भी भौतिक विकास दृष्टव्य हो रहा है यह किरती मनुष्य के द्वारा किये गये श्रम से ही अस्तित्व में आया है। यह बात अलग है कि संसार के अधिकतर देशों में राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक संरचना ऐसी है कि किरती अथवा श्रमिक को उसकी किरत अथवा श्रम के हिसाब से श्रमफल अथवा वेतन नहीं दिया जाता। कई देशों और प्रदेशों में तो श्रमिक की स्थिति अत्यंत बुरी है। कई देशों की राजनैतिक सामाजिक प्रणालियां ही ऐसी हैं कि वहां श्रमिक सारा दिन अपना खून-पसीना एक करके जी-जान से श्रम करता है परंतु तत्काली प्रबंध उसकी अत्यंत मूल आवश्यकताओं की भी पूर्ति नहीं कर सकता। श्रमिक को भूखे पेट ही श्रम करना पड़ता है और सारा दिन श्रम करने के उपरांत जो श्रमफल उसे मिलता है उससे वह अपने आप को और परिवार को दो समय की रोटी भी नहीं जुटा पाता। ऐसी स्थिति में श्रमिक का उदास-निराश, हताश होना स्वाभाविक है। चाहे कि प्रत्येक स्थिति का ऊंचे साहस या मनोबल, धैर्य एवं सिदक अथवा आत्मविश्वास के साथ सामना करना ही उपयुक्त है फिर भी हमारे देश सहित संसार के कई देशों में श्रमिक की स्थिति इतनी दयनीय है कि उसके द्वारा जीवन में ऊंचा साहस या मनोबल कायम रख पाना काफी कठिन है। वस्तुस्थिति यह है कि संसार के कई देशों में कृषक आत्म-हत्या जैसे कुकृत्य को अंजाम देने में लगे हुए हैं। यह बात अलग है कि हमारे देश में कृषकों के इस घोर गलत रुझान के पीछे एक प्रमुख कारण श्रम से बहुत हद तक टूटना या पीछे हटना और दिखावे के आडम्बरों पर, अपनी आर्थिक हैसीयत से कहीं अधिक व्यय करना भी है। फिर भी किसी देश के तत्कालीन राजनैतिक प्रबंध की यह मुख्य जिम्मेवारी है कि वह अपने श्रमिकों को कम से कम उनकी मूल आवश्यकताओं की तो अवश्य ही पूर्ति कराये। अत्यंत बुरी स्थिति मात्र देश के कृषक की ही नहीं उद्योगों तथा अन्य विभिन्न क्षेत्रों-उपक्षेत्रों में काम करने वाले अथवा वहां काम प्राप्त करने के इच्छुक ज़रूरतमंद श्रमिक भी करोड़ों की संख्या में है। बेकारी का प्रचलन अनेकों कारणों से निरंतर जारी है। हमारी सरकारें इसको दूर करने के लिए कई प्रकार के लुभावने वायदे तो करती हैं परंतु ठोस प्रोग्रामों और अमल व व्यवहार में अधिक क्रियाशीलता प्राय: कम ही देखने

में आती है। प्रत्येक शहर और उपनगर में विशेष चौंकों में काफी संख्या में श्रमिक काम मिलने की आशा में निगाहें फेरते दिखाई देते हैं। जैसे ही कोई काम कराने वाला व्यक्ति उनकी ओर आता है तो हरेक श्रमिक की यह इच्छा होती है कि उसे काम मिल जाए ताकि वह सायंकाल को श्रमफल सहित घर पहुंचे और परिवार के राशन का जुगाड़ कर सके। परंतु सभी को नित्य-प्रतिदिन काम नहीं मिलता। अनेकों श्रमिकों को मुंह लटकाये खाली वापस घर जाना पड़ता है। उनको तथा उनके परिवारों को भुखमरी का सामना करना पड़ता है जो कि बहुत ही दुखदायक स्थिति है। गुरमति विचारधारा का तो यहां तक मानना है कि भूखे पेट भक्ति भी नहीं हो सकती। हमारे भक्त साहिबान ने जहां प्रभु-भक्ति मांगी है वहां प्रभु से अपनी आधारभूत आवश्यकताओं की पूर्ति का भी आग्रह किया है। सिख गुरु साहिबान और भक्त साहिबान ने हमको न केवल ईमानदारी वाली किरत करने के लिए कथन किये हैं बल्कि वे निज उदाहरणों से भी ऐसी किरत के लिए हमारे लिए प्रेरणा-स्रोत बने हैं। सिख धर्म के संस्थापक श्री गुरु नानक देव जी ने चार लंबी उदासियों को अंजाम देने के उपरांत अपने द्वारा बसाये नगर करतारपुर में स्वयं कृषि की किरत को अपनाया और लगभग १८ वर्ष तक निभाया। भक्त नामदेव जी, भक्त कबीर जी और भक्त रविदास जी जीवनपर्यंत ईमानदारी वाली किरत से अपना तथा अपने परिवार का गुजारा करते रहे। भक्त नामदेव जी ने कपड़ा रंगने और छापने की किरत की। भक्त कबीर जी समस्त आयु खड्डी पर कपड़ा बुनते रहे। भक्त रविदास जी चरण पादुकाएं अथवा जूते बनाते रहे अथवा उनकी मरम्मत करने की किरत-कार करते रहे।

औद्योगिक क्षेत्र में चाहे आज हमारे देश का श्रमिक काफी हद तक जत्थेबंद अथवा संगठित है और वह उपने मूल अधिकारों के बारे में भी पहले से अधिक सजग है परंतु कुल मिलाकर उसकी स्थिति भी संतोषजनक नहीं। श्रमिकों के जीवन की सुरक्षा के संबंध में भी अभी हमारे देश में बहुत कुछ किया जाना शेष है। नि:संदेह श्रमिकों के पक्ष में कई कानून पारित हो चुके हैं, परंतु उनको पूर्णत: लागू किया जाना अभी काफी दूर की बात बनी हुई है। स्त्री श्रमिकों और बाल श्रमिकों की देश भर में वर्तमान स्थिति और भी अधिक पेचीदा है। उनका मानसिक, शारीरिक और नैतिक शोषण जारी है। विश्व मजदूर दिवस विश्व भर के श्रमिकों को हर वर्ष पुकारता है कि वे अपनी वर्तमान स्थिति को सुधारने हेतु बहुपक्षीय तथा बहुदिशावी प्रयास करें। हमारे देश के सभी श्रमिकों को अपनी वर्तमान दीन-हीन दशा में से निकलने के लिए जहां तत्कालीन राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक क्षेत्रों में अधिक से अधिक ध्यान देना होगा, जहां उनको अपने राजनैतिक प्रबंध से अपने छीने या दबाये गए अधिकारों को स्पष्टत: मांगना होगा वहां उन्हें स्वयं भी गुरमति मार्ग का अनुसरण करके अपना भरपूर और ईमानदारी वाली किरत के कर्त्तव्य पर सच्चे प्रहरी बने रहना होगा। भले ही हमारे समूचे सिस्टम में ईमानदारी पंख लगाकर उड़ती साफ दिखाई दे रही है, फिर भी श्रमिकों को ऐसी स्थिति में भी ईमानदारी कायम रखते हुए अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करते रहना है।

परबतु मेराणु : श्री गुरु अमरदास जी

-स. गुरबख्श सिंघ प्यासा*

जगतु जलंदा रखि लै आपणी किरपा धारि ॥
जितु दुआरै उबरै तितै लैहु उबारि ॥ (पन्ना ८५३)

उपरोक्त पावन वचन तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी के हैं। इनमें गुरु जी अकाल पुरख परमात्मा से विनती (अरदास) करते हैं कि वे इस जलते हुए संसार को अपनी कृपा द्वारा बचाएं एवं उसका उद्धार करें। इसमें उनकी संपूर्ण जगत के प्रति करुणा झलकती है। वे करुणा की साक्षात मूति तो थे ही इसके अतिरिक्त निष्काम सेवा, गुरु-भक्ति, आज्ञाकारिता, धैर्य एवं आशावादिता की अद्वितीय मिसाल भी थे।

सांझीवालता एवं बराबरी पर आधारित जिस सहज/सत्य धर्म की स्थापना श्री गुरु नानक देव जी ने की थी और इसके अंतर्गत (सदियों से तिरस्कारित एवं प्रताड़ित) कथित अछूत एवं नारी जाति के हक में आवाज बुलंद की थी, समाज में चेतनता फैलती जा रही थी।

संगत और पंगत (सांझे लंगर) के प्रावधान से शनैः-शनैः, ऊंच-नीच एवं जात-पात के भेद-भाव घटने लगे थे। वहमों, भ्रमों, पाखंडों एवं थोथे कर्म-काण्डों के जाल को तोड़ने के यत्न भी जारी थे। परन्तु इस मिशन को पूरा करने के लिए एक लम्बी अवधि दरकार थी, इसलिए श्री गुरु अंगद देव जी के रूप में दूसरे पातशाह प्रकट हुए।

श्री गुरु अंगद देव जी ने विद्या के प्रचार-प्रसार के लिए 'गुरमुखी लिपि' को परिष्कृत कर, उसे आधुनिक रूप प्रदान किया। इससे गुरबाणी एवं उसके उद्देश्यों के प्रचार-प्रसार में अधिक तेजी आई। मन के साथ तन को भी स्वस्थ रखने के लिए 'मल-अखाड़ों' की स्थापना की तथा संगत एवं पंगत को और सुदृढ़ किया।

इस शृंख्ला को आगे बढ़ाने के लिए तीसरे सतिगुरु श्री गुरु अमरदास जी ने इस कठिन दायित्व को संभाला। इसके लिए वे बारह वर्ष तक कठिन परीक्षाओं में से गुजर कर गुरगद्दी की कसौटी पर खरे उतरे।

आपके जीवन को तीन मुख्य भागों में बांटा जा सकता है :-

१) आरंभिक काल, २) गुरु चरणों में, ३) गुरु काल।

(१) आरंभिक काल

आपका जन्म ९ ज्येष्ठ, संवत् १५३६ तद्नुसार ५ मई, १४७९ ई को पिता श्री तेज भान जी के गृह, माता सुलक्खणी जी की पावन कोख से गांव बासरके (जिला अमृतसर) में हुआ। पिता से प्राप्त संस्कारों के अनुसार आप पक्के वैष्णव थे, तीर्थ-यात्रा को विशेष महत्त्व देते थे। यह सिलसिला १५२१ ई में शुरू हुआ और निरंतर २० वर्षों तक चलता रहा। सन् १५४१ ई में जब आप २१वीं बार हरिद्वार गए तो एक ब्रह्मचारी के बोलों (शब्दों) ने उनके जीवन की दिशा ही बदल दी, 'कि जिस व्यक्ति को कोई गुरु नहीं मिला, उसका जीवन व्यर्थ है।' बस उसी दिन से गुरु की खोज शुरू हो गयी।

*२२, प्रभु पार्क सोसायटी, ओल्ड छानी रोड, बडोदरा-२, मो: ०९९१३०-५४३२३

दैव योग से आपको अपने छोटे भाई की बहू बीबी अमरो (जो श्री गुरु अंगद देव जी की पुत्री थी) के मधुर कंठ से श्री गुरु नानक देव जी का शबद : *"करणी कागदु मनु मसवाणी बुरा भला दुइ लेख पए ॥ जिउ जिउ किरतु चलाए तिउ चलीऐ तउ गुण नाही अंतु हरे ॥ (पन्ना ९९०)"* सुनने को मिला तो उन्हें ऐसे लगा जैसे इस शबद में उनके मन की दशा का वर्णन हो। बस, फिर क्या था, दिशा मिल गई। आप बीबी अमरो जी को साथ लेकर श्री गुरु अंगद देव जी के पास खडूर साहिब पहुंच गये, जैसे सब भक्तों का अंत हो गया और आप वहीं के हो कर रह गये।

२. गुरु-चरणों में

वाह! ३६ वर्ष के गुरु और ६२ वर्ष के शिष्य। आयु एवं संसारिक रिश्ते विलीन हो गये। बस, गुरु और शिष्य का संबंध सर्वोपरि हो गया। प्रतिदिन छ: मील दूर बहती ब्यास नदी से जल लाकर गुरु जी को स्नान करवाना, दिन में गुरु के लंगर एवं गुरु की संगत की सेवा करना आदि ही जीवन के लक्ष्य बन गये। इसके साथ-साथ गुरबाणी एवं गुरु जी के उपदेशों को आत्मसात करते गये।

श्री गुरु अंगद देव जी अपने शिष्य को पूरी तरह परख रहे थे। शिष्य पर दिन-प्रतिदिन निष्काम-सेवा और नाम-बाणी का रंग गहरा होता जा रहा था। इस प्रकार बारह वर्ष की अवधि बीत गई। वे हर प्रकार की परीक्षा में सफल हुए। संगत की दृष्टि में वह 'अमरू निथावां' गुरु नानक पातशाह की गुरगद्दी का उपयुक्त हकदार समझा गया।

श्री गुरु अंगद देव जी के दोनों पुत्रों (भाई दातू जी और भाई दासू जी) द्वारा विरोध दर्शाया गया। श्री गुरु अंगद देव जी ने गुरु नानक पातशाह की गुरगद्दी के लिए गुणों के आधार पर पुत्रों के स्थान पर अपने शिष्य को उपयुक्त समझते हुए बाबा अमरदास जी को गुरगद्दी पर आसीन कर दिया।

३. गुरु-काल

आप १५५२ ई में गुरगद्दी पर आसीन हुए। जिस प्रकार श्री गुरु नानक देव जी ने करतारपुर (जो अब पाकिस्तान में है) नगर बसा कर गुरसिखी का केन्द्र बनाया था एवं श्री गुरु अंगद देव जी ने खडूर साहिब को उसी प्रकार आपने गोइंदवाल नगर बसाया और इसे 'सिखी के धुरे' के रूप में विकसित किया।

सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार

सहज, सरल और आडम्बर-रहित समाज की स्थापना के तहत छुआ-छूत और भेदभाव पर कुठाराघात करते हुए संगत और पंगत की परम्परा में 'पहले पंगत पाछै संगत' का प्रावधान किया।

नारी जाति का उत्थान

नारी जाति की दारुण दशा को सुधारने के लिए परदा प्रथा का निषेध किया। विधवा-विवाह को प्रोत्साहित किया एवं अमानुषिक सती-प्रथा को अपनी बाणी एवं उपदेशों में नकारा। इसी प्रकार वहमों, भ्रमों एवं पाखंडों पर प्रहार किया और समाज में अधिक चेतना फैलाई।

प्रचार केन्द्रों की स्थापना

गुरसिखी के प्रचार के लिए २२ मुख्य प्रचार केन्द्र (मंजियां) एवं ५२ लघु केन्द्र (पीढ़ियां) स्थापित किए, जिनके प्रचार के लिए योग्य गुरसिख पुरुषों के साथ योग्य गुरसिख स्त्रियों को भी नियुक्त किया।

विरोधता

जैसे-जैसे सिख धर्म का घेरा बढ़ता जा रहा था और जनसाधारण (जिनमें हिन्दू ही

नहीं मुसलमान भी थे) इस सहज-मार्ग की ओर खिंच रहे थे, वैसे-वैसे ब्राह्मण वर्ण के आगुओं एवं मुस्लिम कट्टरपंथियों का विरोध भी बढ़ता जा रहा था। अंततः वे अपनी शिकयातें लेकर अकबर बादशाह के दरबार में जा पहुंचे एवं निराधार लांछन लगाए। तफतीश करने पर अकबर बादशाह ने उन शिकायतों को नकारते हुए शिकायत-कर्ताओं को फटकारा। कुछ समय के पश्चात अकबर बादशाह स्वयं गुरु जी के दर्शनों को आया और वार्तालाप करके बहुत खुश हुआ तथा गुरु जी को श्रद्धा-स्वरूप 'झबाल' परगने के १२ गांवों का पट्टा भेंट किया।

गुरु जी का देहावसान १ आश्विन, सं. १६३१ तद्नुसार १ सितंबर, १५७४ ई में हुआ।

आपने पूर्ववर्ती गुरुओं (श्री गुरु नानक देव जी तथा श्री गुरु अंगद देव जी) एवं सिख मत की सामान्य धारणा के अनुरूप गृहस्थ धर्म का पूरी तरह पालन किया। आपका विवाह ११ माघ सं. १५५९ को श्री देवीचन्द की पुत्री सुश्री राम कौर जी के साथ हुआ था। आपके दो पुत्र- बाबा मोहन जी और बाबा मोहरी जी तथा दो सपुत्रियां- बीबी दानी जी और बीबी भानी जी थीं।

अपने देहावसान से पहले आपने गुरु नानक पातशाह की गुरगद्दी के लिए पूरी तरह परख कर, अपने छोटे दामाद (गुरु) रामदास जी को (चौथे सतिगुरु के रूप में) गुरगद्दी पर आसीन कर दिया।

आपने जो अपने अंतिम संस्कार के लिए कर्मकांड-रहित आदेश दिये थे वही मर्यादा गुरसिखों के लिए निर्धारित है।

गुरबाणी की रचना

अपने २२ वर्ष के गुरु-काल में आपने पर्याप्त पावन बाणी की रचना की। आकार की दृष्टि से श्री गुरु अरजन देव जी और श्री गुरु नानक देव जी के बाद सबसे अधिक आपकी बाणी है।

आपकी बाणी गुरु नानक पातशाह में गुरमति चिंतन की व्याख्या-विस्तार है। सरल भाषा में मानव जीवन का मनोरथ, माया का स्वरूप, हउमै (अहम), सहज अवस्था द्वारा प्रभु-मिलन आदि बहुत सुंदर ढंग से निरूपण किया गया है।

आपकी बाणी में 'अनदु' के शीर्षक से रचित बाणी आपका शाहकार मानी जाती है। 'आनन्द', 'सुख' का पर्याय नहीं है। 'सुख' जहां इन्द्रियों से संबंधित है, वहां 'आनन्द' आत्मिक अनुभूति है जो आदि काल से भक्तों का परम लक्ष्य रहा है। आनंद की प्राप्ति का यही लक्षण है कि साधक अपने इष्ट में अभेद हो जाता है। आपने यह रचना रामकली राग में निबद्ध की है।

आप ने अपनी रचनाओं में १७ भारतीय रागों का उपयोग किया। इससे ज्ञात होता है कि आप शास्त्रीय संगीत के भी अच्छे ज्ञाता थे।

अंत में मन को संबोधित आपका एक पद्य प्रस्तुत है :

मन तूं जोति सरूपु है आपणा मूलु पछाणु ॥
मन हरि जी तेरै नालि है गुरमती रंगु माणु ॥
(पन्ना ४४१)

भट्ट भल जी ने अपनी बाणी में आपके प्रति यथार्थपरक एवं सटीक उद्गार प्रकट किए हैं :

भले अमरदास गुण तेरे तेरी उपमा तोहि बनि आवै ॥ (पन्ना १३९६)

श्री गुरु अमरदास जी के अनुसार उत्तम व्यक्ति के लक्षण

(चार अष्टपदियों के संदर्भ में)

*-डॉ. दीपशिखा**

तृतीय गुरु श्री गुरु अमरदास जी का जीवन सदैव लोककल्याण हेतु समर्पित रहा है। उनका उद्देश्य विकार ग्रसित जन को अज्ञानता के अंधेरे से मुक्त करवा ज्ञान रूपी प्रकाश-पथ की ओर अग्रसर करना था। अपनी बाणी के माध्यम से उन्होंने मानव-जाति के समक्ष अध्यात्म का महत्त्व प्रकट करते हुए कहा है कि यह सम्पूर्ण जगत् एवं इसके समस्त भौतिक पदार्थ नश्वर हैं, जो मानव इन भौतिक पदार्थों के मोह में ग्रसित रहता है वह कभी जन्म-मरण के बंधन से मुक्त नहीं हो सकता। इस जगत् में केवल परमात्मा का नाम रूपी धन ही शाश्वत एवं श्रेष्ठ है। शेष लौकिक सम्पत्ति विष रूप है। किन्तु मानव इस मिथ्या सांसारिक पदार्थों के मोह से ग्रसित हो अपनी इच्छापूर्ति हेतु अनेक दुष्कृत्य करता है जिससे कि वह दुष्ट प्रवृत्ति को धारण कर इस समाज में अपयश का भागी बनता है। श्री गुरु अमरदास जी ने अपनी अष्टपदियों में जहां अधम मानव के लक्षणों का वर्णन करते हुए व्यंग्यात्मक शैली में उत्तम मानव के गुणों का विवेचन किया है वहां साथ ही मानवता के विकास एवं समाज में नैतिकता के प्रसार हेतु दुष्ट व्यक्ति का निषेध एवं सद्गुणी व्यक्ति को प्रधानता देते हुए इन दुर्गणों के त्याग एवं सद्गुणों को ग्रहण करने का भी संदेश दिया है।

श्री गुरु अमरदास जी के अनुसार स्वार्थ एवं लोभ रूपी विकार से मुक्त मानव को श्रेष्ठ मानव की संज्ञा दी जाती है क्योंकि जिसके हृदय में लोभ एवं स्वार्थ की भावना है वह दुष्ट व्यक्ति निज-स्वार्थ की पूर्ति हेतु अनेक कुकर्म करता हुआ समाज का अपकार ही करता है। उसकी बोली में सर्वदा विष ही भरा होता है तथा वह झूठ एवं कपट रूपी वस्त्र को धारण करते हुए अपने वास्तविक रूप को छिपा लेता हैं :

मनमुखा नो परतीति न आवी अंतरि लोभ सुआउ ॥
गुरमुखि हिरदै सबदु न भेदिओ हरि नामि न लागा भाउ ॥
कूड़ कपट पाजु लहि जासी मनमुख फीका अलाउ ॥ (पन्ना ६३७)

इसके विपरीत छल, कपट एवं झूठ आदि व्यसनों से रहित मानव की बाणी अमृत तुल्य होती है; उसके वचनों में मानवता का गान होता है। गुणी व्यक्ति अपने अहं का त्याग कर हर्ष एवं शोक को समान मानते हुए जनकल्याण हेतु तत्पर रहते हैं। वे अपने हृदय में विषय रूपी वासनाओं को जगह नहीं देते हैं :

भगता विचि आपि वरतदा प्रभ जी भगती हू तू जाता ॥
माइआ मोह सभ लोक है तेरी तू एको पुरखु बिधाता ॥
हउमै मारि मनसा मनहि समाणी गुर कै सबदि

**रिसर्च एसोसिएट, संस्कृत विभाग, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला।*

पछाता ॥ *(पन्ना ६३७-३८)*

जबकि अधम प्रवृत्ति का मानव अपनी अभिलाषा की पूर्ति हेतु किसी भी मानव का अधिकार तक छीनने को तत्पर रहता है इसके विपरीत सद्‌गुणों से युक्त मानव के हृदय में परमात्मा का भय होता है :

गुरमती भउ ऊपजै भाई भउ करणी सचु सारु ॥
प्रेम पदारथु पाईऐ भाई सचु नामु आधारु ॥
(पन्ना ६३८)

अत: उसके कर्म भी श्रेष्ठ होते हैं। इस प्रकार मानव जैसे कृत्य करता है उसी प्रकार का फल प्राप्त करता है। गुणी व्यक्ति अपने श्लाघनीय कर्मों के कारण समस्त समाज की प्रंशसा का पात्र बनता है। किन्तु दुष्ट व्यक्ति की नीच बुद्धि के समान ही उसके कृत्य भी नीच होते हैं अर्थात् वह सदैव मानवता का अनिष्ट ही चाहता है। अधम प्रवृत्ति का व्यक्ति दूसरों को तो उपदेश देने में तत्पर होता है किन्तु स्वयं गुरु द्वारा दिए गए उपदेश का पालन नहीं करता। ऐसा व्यक्ति उस काले काक के सदृश है जो मुख की चोंच से तो ज्ञान की बातें करता है किन्तु उसके भीतर लोभ, अहंकार, मोह, माया एवं हिंसा आदि की भावना होती है अर्थात् वह भीतर से ज्ञानरहित होता है। उसके विचार भी शूद्र ही होते हैं तथा वह सर्वदा मानव-जाति को हानि पहुंचाने के विषय में ही सोचता रहता है और अज्ञानता से ग्रसित हो अंधे कर्मों भाव दुष्कर्मों में प्रवृत्त रहता है अर्थात् गुरु से विमुख रहना अथवा गुरु-उपदेश के विरुद्ध आचरण करना अधमता का द्योतक है। ऐसा व्यक्ति अज्ञानता के अंधेरे में रहता हुआ साधना से दूर एवं मोक्ष से वंचित रहता है :

जगु कऊआ मुखि चुंच गिआनु ॥
अंतरि लोभु झूठु अभिमानु ॥
बिनु नावै पाजु लहगु निदानि ॥ . . .
आपि न बूझै लोक बुझावै ॥
मन का अंधा अंधु कमावै ॥ *(पन्ना ८३२)*

इसके विपरीत शुभ लक्षणों वाला व्यक्ति दूसरों को उपदेश देने से पूर्व स्वयं उस उपदेश का पालन अपने जीवन में करता है। सत्य-पथ का अनुसरण करते हुए दूसरों को इस पथ की ओर अग्रसर करना ही उसका मुख्य ध्येय होता है। जब वह उस परमतत्त्व को जान लेता है अर्थात् जब उसे सांसारिक मोह के विषय में ज्ञान प्राप्त हो जाता है तो उसके हृदय में संकल्प-विकल्प का द्वन्द समाप्त हो जाता है। वह समस्त मानव-जाति को एक रूप मानता हुआ अर्थात् एक ही परमात्मा का अंश मानता हुआ पर-सेवा में मग्न रहता है। वह द्वैत से अद्वैत पथ की ओर बढ़ता हुआ तथा प्रत्येक धर्म का सम्मान करता हुआ उस परमतत्व की अराधना में निरत रहता है तथा अपने उपदेश के माध्यम से अपने ज्ञान का प्रकाश समस्त जगत में प्रसारित करता रहता है और अंत में उसकी देह स्वर्ण के समान शुद्ध हो उस परमात्मा में ही लीन हो जाती है :

सतिगुरि सेविऐ दूजी दुरमति जाई ॥
अउगण काटि पापा मति खाई ॥
कंचन काइआ जोती जोति समाई ॥
(पन्ना ८३३)

अधम व्यक्ति अपने दुष्कृत्यों के कारण स्वयं तो नाश को प्राप्त होता ही है साथ ही अपने समस्त कुल के नाश का भी कारण बनता है। उत्तम गुणों वाले व्यक्ति सर्वदा बड़ों का सम्मान करने वाले, अनुजों से स्नेह का व्यवहार करने वाले होते हैं। उनके सभी कृत्य

यशदायक होते हैं। ऐसे व्यक्ति अपने मानव-जीवन को सार्थक करने के साथ-साथ समाज में अपने कुल को भी यश दिलाने वाले होते हैं:

जो सतिगुरु सेवहि आपणा भाई तिन कै हउ लागउ पाइ ॥

जनमु सवारी आपणा भाई कुलु भी लई बखसाइ ॥ (पन्ना ६३८)

सद्गुणी व्यक्ति के महत्त्व को स्पष्ट करते हुए गुरु जी का कथन है कि हरि गुणहीन जीवों को सत्गुरु की सेवा में लगाकर क्षमा करता है अर्थात् मानव ने कितने ही दुष्कृत्य क्यों न किए हों किन्तु जब गुणहीन व्यक्ति उत्तम व्यक्ति की संगति में रह कर उस परमतत्त्व को जान लेता है तो वह भी परमपद का अधिकारी बन जाता है :

निगुणिआ नो आपे बखसि लए भाई सतिगुर की सेवा लाइ ॥

सतिगुर की सेवा ऊतम है भाई राम नामि चितु लाइ ॥ (पन्ना ६३८)

इसी प्रकार जो जीव रूपी स्त्री अपने पति (परमात्मा) की आज्ञा का पालन नहीं करती गुरु जी ने उसे अधम व्यक्ति की संज्ञा दी है अर्थात् पति (परमात्मा) की आज्ञा का पालन न करने वाली, हठी, स्वेच्छाचारी जीव रूपी स्त्री को समाज में कुलक्षिणी, व्यभिचारिणी एवं दुश्चरित्रा कहा जाता है :

पिर का हुकमु न जाणई भाई सा कुलखणी कुनारि ॥

मनहठि कार कमावणी भाई विणु नावै कूड़िआरि ॥ (पन्ना ६३९)

जो जीव रूपी स्त्री बाह्य आडम्बरों से ग्रस्त रहती है भाव समाज को दिखाने हेतु पति का सम्मान करती है उसके हृदय में पति के लिए सम्मान नहीं है भाव जो जीव प्रभु-प्रेम का त्याग कर मानसिक संकेतों के आधार पर जीवनयापन करता है अर्थात् जिसका हृदय उसके वश में नहीं होता और जो गुरु के उपदेशों की उपेक्षा करता है, वह जीव मनमुख अथवा कुलटा स्त्री के तुल्य है।

इसके विपरीत जो जीव रूपी स्त्री अपने पति (परमात्मा) की स्मृति में निजत्व को विस्मृत कर देती है ऐसी स्त्री का सम्मान समस्त समाज करता है तथा सद्गुणों से सम्पन्न अर्थात् परमात्मा का सिमरन करने वाले जीव को सदैव सुख प्राप्त होता है :

हरि जीउ सबदे जापदा भाई पूरै भागि मिलाइ ॥

सदा सुखु सोहागणी भाई अनदिनु रतीआ रंगु लाइ ॥ (पन्ना ६३९)

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि गुरु जी ने लोभ, मोह, अहं, स्वार्थ आदि दुर्गणों को अनीति की पराकाष्ठा माना है। गुरु जी ने इन दुर्गणों से युक्त मानव को मनमुख कहते हुए उसे नर्क का अधिकारी माना है। साथ ही जो मानव लोभ, मोह आदि विकारों से मुक्त हो स्वयं को परोपकार हेतु समर्पित कर धर्म एवं अहिंसा का पालन करता है वही मानव श्रेष्ठ मानव कहलाता है। अपने मन को वश में कर विषयों की लोलुपता से स्वतन्त्र मानव ही उस परमपद को प्राप्त करता है। असत्य, कपट, तृष्णा, लोभ आदि दुर्गुणों से मुक्त मानव का व्यवहार नैतिकता से ही परिपूर्ण नहीं होता अपितु वह समाज के लिए भी एक आदर्श होता है।

निमाणिआं दे माण श्री गुरु अमरदास जी

*-बीबी अमरजीत कौर**

श्री गुरु अमरदास जी का जन्म ९ ज्येष्ठ संवत १५३६ को पिता श्री तेज भान जी के घर माता लछमी जी (सुलक्खणी जी) के उदर से गांव बासरके, जिला अमृतसर में हुआ। आप के पिता भल्ला खत्री बरादरी में से थे। वे बड़े ही धार्मिक विचारों और सादा जीवन व्यतीत करने वाले व्यक्ति थे, जिसका प्रभाव उनके सपुत्र श्री गुरु अमरदास जी पर पड़ना स्वाभाविक ही था। श्री गुरु अमरदास जी जब बड़े हुए तो उन्होंने अपने पिता के साथ उनके कामों में हाथ बंटाना शुरू कर दिया।

श्री गुरु अमरदास जी की शादी ११ माघ संवत १५५९ को श्री देवी चंद बहल की सपुत्री श्री राम कौर जी के साथ हुई। आप के घर दो पुत्र—बाबा मोहन जी तथा बाबा मोहरी जी और दो सपुत्रियां—बीबी दानी जी और बीबी भानी जी पैदा हुईं।

अपने पिता की तरह श्री गुरु अमरदास जी भी वैष्णव मत के अनुसारी थे। वे धर्म की कार करते, दान-पुन्य, पूजा-पाठ, जप-तप करते। एक ब्रह्मचारी साधू आप को मिला। दोनों में वार्तालाप हुई और दोनों इकट्ठा सफर करने लगे। एक महीने की यात्रा के बाद दोनों बासरके आ गए। साधू कुछ दिन श्री गुरु अमरदास जी के घर पर ही ठहर गया और श्री गुरु अमरदास जी के हाथों से बना हुआ खाना खाने लग पड़ा। एक दिन साधू ने श्री गुरु अमरदास जी को एक सवाल पूछा कि तुम्हारा गुरु कौन है? श्री गुरु अमरदास जी ने जवाब दिया कि अभी तक उन्होंने कोई गुरु धारण नहीं किया। यह सुनकर साधू गुस्से में आ गया और श्री गुरु अमरदास जी को कहने लगा कि अरे यह क्या हुआ? निगुरे का तो दर्शन भी बुरा होता है! मैं तो एक महीने से अधिक तुम्हारे पास रहा हूं, तुम्हारे साथ खाता-पीता रहा हूं, मैं तो अभागा हूं। मेरे तो सभी धर्म-कर्म निष्फल गये, मेरा तो धर्म-कर्म ही नाश हो गया! साधू ऐसे वचन बोलता हुआ वहां से चला गया। श्री गुरु अमरदास जी के चेहरे पर उदासी छा गई और वे गुरु धारण करने की मन में ठान बैठे। कई साधू-संतों से मिले पर किसी से भी उनको शांति प्राप्त न हुई।

एक दिन श्री गुरु अमरदास जी सुबह अमृत वेले उठे और उनके कानों में कुछ मीठी-मीठी मधुर-सी आवाज सुनाई दी। श्री गुरु अमरदास जी के छोटे भाई की पुत्र वधू और श्री गुरु अंगद देव जी की पुत्री बीबी अमरो जी बाणी का यह शबद पढ़ रही थीं :

करणी कागदु मनु मसवाणी बुरा भला दुइ लेख पए ॥
जिउ जिउ किरतु चलाए तिउ चलीऐ तउ गुण नाही अंतु हरे ॥ (पन्ना ९९०)

यह बाणी सुनकर श्री गुरु अमरदास जी के मन पर बहुत असर हुआ। वे उनके पास गए और उनसे पूछा कि पुत्री! जिस मधुर बाणी का तुम गुणगान कर रही हो यह किसकी है और वे कहां रहते हैं? बीबी अमरो जी ने उत्तर दिया कि यह बाणी श्री गुरु नानक देव

**प्रिंसीपल, न्यू अमृतसर मॉडल स्कूल, गोबिंद नगर, भुल्लर रोड, बटाला (गुरदासपुर)-१४३५०५*

जी की है और इस समय मेरे पिता श्री गुरु अंगद देव जी उनकी गद्दी पर बैठे हैं। यह सुनकर श्री गुरु अमरदास जी के मन में उनके दर्शनों की लोचा पैदा हुई और वे उनसे मिलने खडूर साहिब पहुंच गए।

खडूर साहिब पहुंच कर श्री गुरु अमरदास जी श्री गुरु अंगद देव जी की हजूरी में गए तो झट से उनके चरणों में गिर पड़े। मन को शांति प्रतीत हुई। गुरु जी ने सिर पर हाथ रखा और फिर श्री गुरु अमरदास जी को उठाकर पास बैठने के लिए कहा। लेकिन श्री गुरु अमरदास जी नीचे पीढ़ी पर बैठ गए और कहने लगे, "मैं आपके पास रिश्तेदार बनकर नहीं आया, मैं तो भिखारी बनकर आप की शरण में आया हूं। बेआसरा और बेठिकाना हूं। मैं इन चरणों की ओट लेकर यहां पर आया हूं। मुझे अपने चरणों में ठिकाना बख्शिश करें।" श्री गुरु अंगद देव जी ने श्री गुरु अमरदास जी को अपने पास रखा और सिखी की दात बख्शिश की।

श्री गुरु अमरदास जी खडूर साहिब में रहकर अपने तन-मन से गुरु जी के हजूर सेवा करने लग पड़े। आप रोजाना अमृत वेले उठ कर ब्यास दरिया से पानी की गागर भर कर लाते और गुरु जी को स्नान कराते। फिर वे लंगर में जल पहुंचाते और लंगर में सेवा करते।

एक दिन श्री गुरु अमरदास जी रोजाना की तरह ब्यास दरिया से जल की भरी गागर लेकर आ रहे थे तो जोरदार बारिश शुरू हो गई। श्री गुरु अमरदास जी का वृद्ध शरीर होने के बावजूद भी उन्होंने अपने कंधे से गागर को नीचे नहीं गिरने दिया। श्री गुरु अमरदास जी वाहिगुरु का जाप करते खडूर साहिब पहुंच गए। गांव में पहुंचते रास्ते में उनका पांव जुलाहे के घर के बाहर स्थित एक गड़े हुए लकड़ी के खूंटे से टकराया और वे गिर पड़े, लेकिन उन्होंने गागर को कंधे से गिरने नहीं दिया। गिरने की आवाज सुनकर पति के कहने पर जुलाही बाहर देखने आई तो कहा—वही अमरू निथावां, जिसको न दिन को चैन, न रात को आराम, जो घर-बार से गया-गुजरा है और खानदान के सम्मान का ख्याल छोड़ कुड़मों (समधी) का पानी भरता फिरता है।"

श्री गुरु अमरदास जी उठे और जुलाही की बात सुनकर कहने लगे, "कमलिए! जिसको ठिकाना मिल गया दीन-दुनी के साईं गुरु का, वह निथावां क्यों? मेरा सहारा तो गुरु आप है कमलिए!"

इतना कह श्री गुरु अमरदास जी श्री गुरु अंगद देव जी ओर चल पड़े। वहां पहुंच गुरु जी को स्नान कराया। बाद में गुरु जी ने श्री गुरु अमरदास जी से सुबह घटी घटना के बारे में पूछा तो श्री गुरु अमरदास जी ने कहा कि आप सब कुछ जानते हो! आप से कभी कुछ छुपा है क्या? इतने में जुलाहा अपनी पत्नी को लेकर आप गया और सारी घटना के बारे में बताया और विनती कि मेरी पत्नी से भूल हो गई, उसे बख्शें! श्री गुरु अंगद देव जी ने कहा कि "जो व्यक्ति जीवन के सही मार्ग पर है उसे यूं कहना उपयुक्त नहीं। जाओ! प्रभु तुम्हें सुमार्ग बख्शे!"

गुरु जी ने श्री गुरु अमरदास जी पर बख्शिश करते हुए कि कहा कि पुरखा, तुम निमाणों का मान हो, निओटों की ओट हो, निआसरों का आसरा हो, तुम धन्य हो!

इसके कुछ समय बाद गोंदे नामक आदमी की विनती पर कि आप ब्यास दरिया के पत्तन पर उसकी जमीन पर एक नगर बसाएं, तो श्री गुरु अंगद देव जी ने श्री अमरदास जी को आज्ञा की और गोंदे खत्री के साथ भेजा। श्री

गुरु अमरदास जी ने वहां एक नगर बसाया और उसका नाम गोइंदवाल रखा। श्री गुरु अमरदास जी वहां पर मकान बनाकर रहने लगे और रोजाना प्रातः काल गुरु जी को स्नान कराकर, उनके वस्त्र धोकर, लंगर में सेवा कर शाम को खडूर साहिब से वापस गोइंदवाल आ जाते।

इस तरह श्री गुरु अंगद देव जी ने श्री गुरु अमरदास जी की सेवा-भावना देख, प्रत्येक परीक्षा में सफल होने पर, श्री गुरु अमरदास जी को श्री गुरु नानक देव जी की बख्शिश गुरगद्दी का सही उत्तराधिकारी मान उन्हें ३ वैसाख संवत् १६०९ को गुरगद्दी का तिलक बाबा बुड्डा जी से लगवाया। श्री गुरु अमरदास जी को गुरु जी ने शीश झुकाया और सारी संगत श्री गुरु अमरदास जी को नत्मस्तक हुई।

श्री गुरु अमरदास जी के गुरगद्दी पर बैठते समय ही श्री गुरु अंगद देव जी के पुत्रों ने उनका विरोध करना शुरू कर दिया। श्री गुरु अंगद देव जी के महिल माता खीवी जी के समझाने और श्री गुरु अमरदास जी की नम्रता देख सब कुछ शांति से हल हो गया।

श्री गुरु अमरदास जी ने अपने गुरु-काल के समय समाज सुधार के बहुत से कार्य किए। उन्होंने गरीबों, अनाथों को सहारा दिया। गुरु जी ने श्री गुरु नानक देव जी द्वारा चलाई लंगर की प्रथा को आगे बढ़ाया और जात-पात का खंडन किया और ऊंच-नीच को खत्म किया। गुरु जी ने छुआ-छूत का डट कर विरोध किया। संगत में जो भी गुरु जी के दर्शन करने आता तो उसे पहले लंगर में परशादा छकने के बाद ही गुरु जी के दर्शन पाने की आज्ञा की। यहां तक कि बादशाह अकबर ने भी पहले लंगर में परशादा छकने के बाद ही गुरु जी के दर्शन किये।

श्री गुरु अमरदास जी ने समाज के झूठे कर्मकांडों और फोकट आडंबरों को खत्म किया। गुरु जी ने सती-प्रथा को खत्म कर और स्त्री जाति को ऊंचा उठाने के लिए उसको समाज में सम्मान की पदवी पर बिठाया। गुरु जी ने पर्दा-प्रथा का भी खात्मा किया और सभी स्त्रियां घर से बाहर निकल लंगर में सेवा करतीं।

श्री गुरु अमरदास जी ने गुरसिखी के प्रचार और श्री गुरु नानक देव जी के उपदेश को आगे बढ़ाने के लिए सारे इलाके को बाईस (२२) भागों में बांटा। इनको बाईस मंजियां भी कहा जाता है। प्रत्येक मंजी का एक मुखी होता, वह देश के अलग-अलग भागों में गुरसिखी का प्रचार करता।

श्री गुरु अमरदास जी ने गोइंदवाल के इलाके से पानी की कमी को पूरा करने के लिए बाउली साहिब का भी निर्माण कराया। यह कार्य संवत् १६१६ से शुरू होकर संवत् १६२१ को संपूर्ण हुआ। बाउली की तैयारी के बाद गुरु जी ने इस स्थान पर पहली बार वैसाखी का मेला मनाया। उसके बाद हर साल यहां पर वैसाखी का मेला मनाया जाता है।

जैसे श्री गुरु अंगद देव जी ने श्री गुरु अमरदास जी को श्री गुरु नानक देव जी की गुरगद्दी का सही वारिस चुना, वैसे ही श्री गुरु अमरदास जी ने अपनी सपुत्री बीबी भानी जी के पति भाई जेठा जी (श्री गुरु रामदास जी) को हरेक परीक्षा में पूरे उतरने पर और हर तरह से योग्य समझकर चौथे गुरु के रूप में गुरगद्दी बख्शिश कर सब संगत को उनके सान्निध्य में रहने को कहा। श्री गुरु अमरदास जी २ आश्विन सं. १६३१ को ज्योति जोत समा गए।

कविता

लासानी जीवन : श्री गुरु अमरदास जी

*–श्री सुरजीत दुखी**

सेवा स्वरूप बनकर, निष्काम करम करते हुए,
गुरु अंगद देव से, गुरगद्दी का प्रसाद पा लिया।
निथावियां दा थान, निमाणियां दा माण तथा
निगतियां दी गति, निपतियां दी पति का वर पा लिया।
साधारण परिवार में पैदा होकर, कर्म कमाया,
बैठ दुकान पर पिता जी का, हाथ बंटाया।
संस्कार धार्मिक रुचियों के, लिये पिता से,
बार इक्कीस पांव नंगे, हरिद्वार का चक्र लगाया।
लेकिन फिर भी मन को शांति, न मिल पाई।
कुदरत ने ब्रह्मचारी से, भेंट कराई।
उसने पांव पर देख पदम, भविष्य बताया।
बादशाह या महात्मा होने को यह, जन्म है पाया।
करवाया घर रख कर भोजन, ब्रह्मचारी को,
पर आप से ब्रह्मचारी ने, प्रश्न यह पाया।
गुरु कौन हैं आपके, जिनसे दीक्षा पाई?
अभी गुरु धारा नहीं, यह उत्तर आया।
निगुरे के हाथों भोजन, न करने का संकल्प बताया,
अमरदास के हाथों भोजन करने को, अनर्थ बताया।
कहे गुरु, तो कांच से हीरा, कौड़ी से करोड़ करे।
मूड़ से पंडित, चोर से साध कर, गुण जिंदगी में गुरु भरे।
मनुष्य धारण कर गुरु-उपदेश को, आगे बढे,
और इसी चोले में भवसागर से पार उतरे।
बीबी अमरो उनके घर, भतीजे की पत्नी बन आई थी।
अमृत वेले जब उसने, जपु जी साहिब की बाणी गाई।
कानों में जब स्वर गुरबाणी के गूंजे,
कहते बीबी अमरो को, यह बाणी कहां से पाई?
गुरु नानक की बाणी है यह, बीबी अमरो ने बतलाया।
उनके ही स्वरूप गुरु अंगद देव जी, अब गुरगद्दी को है पाया।
रिश्ते में हैं समधी आपके, खडूर साहिब में रहते हैं।
संगत को करते उपदेश और सतिनाम ही कहते हैं।
मिलने को तत्पर हुए तब अमरदास जी,
बीबी अमरो उनको खडूर साहिब ले आई।
दर्शन किए गुरु अंगद देव के, उपदेश ने रंग दिखाया।
सुध-बुध बिसर गई, अथाह प्रेम मन में था आया।
प्रेम उमड़ता देख गुरु ने, अमरदास को गले लगाया।
वापस आ न सका जिज्ञासु, गुरु के दर को ही अपनाया।
गुरु जी को अमृत वेला को, स्नान कराते थे।
सेवक बनकर गागर भरकर, ब्यास से पानी लाते थे।

***३३२/९, गली जट्टां, अंदरून लाहौर गेट, श्री अमृतसर।*

सर्दी इन्तहा हो चाहे, परवाह नहीं वो करते थे।
निश्चय में वे पूर्ण हुए और किसी से भी न डरते थे।
एक दिन तूफान और झंझावात ने, जुलाहे के यहां घेर लिया।
पानी से भरी गागर को, खड्डी पर ही उड़ेल दिया।
पूछा जुलाहे ने जुलाही से, कौन है, कहां से आया है?
पत्नी बोली, वही है अमरू, जो अब तक निथावां है।
नम्रतापूर्वक तब अमरदास जी ने उत्तर दिया, अरी कमली!
"गुरु वाला हो गया हूं, निथावां अब मैं नहीं रहा।"
साधु बोले सहज सुभाए, साधु का बोलिया वृथा न जाए।
कमली झल्ली हुई जुलाही, जैसे दिमाग ही नहीं रहा।
जान अधिकारी अमरदास को, तीसरे गुरु थाप दिया।
दासू और दातू दोनों ने, रोष अपना जाहिर किया।
गोंदे खत्री के नाम पे, गोइंदवाल का नगर बसाया।
चार प्रकार के नियम बनाए और लंगर को खूब चलाया।
सभी जाति वालों की, पंगत एक लगाई,
राजा रंक उसी पंगत में, बैठाने की रीति चलाई थी।
यहां पर एक करिश्मे का, वर्णन मैं तुम्हें बताता हूं।
गुरु की शक्ति का आभास, आपको भी करवाता हूं।
एक ब्राह्मण ने नीच जाति की, पंगत से इंकार किया।
कच्ची रसद ले लगा पकाने, पर गलती को महसूस किया।
महिमा बढ़ती गुरु अमरदास की, दातू सहन न कर पाया।
गोइंदवाल साहिब आकर उसने, फिर इक कुफर कमाया।
पहुंचे जन्म स्थान बासरके, एक कोठे में छिप गए।
कुंडी लगा ली अन्दर, और ध्यान में बैठ गए।
'दरवाजा जो भी खोलेगा, खानी पड़ेगी गुरु की मार।'
लिखवाया उस कोठे पर, मिलने से कर दिया इंकार।
ढूंढते-ढूंढते बाबा बुड्डा जी सीधे वहां चले आए।
घबराये लिखत देख कोठे पर, कुछ न तब कर पाए।
लड़ाई युक्ति बाबा जी ने, पीछे से सन्न लगा डाली।
सिमरनलीन पाया गुरु जी को, गुरु आज्ञा भी निभा ली।
फिर गुरु जी के संग, गोइंदवाल संगत सारी लौट आई।
बनाया इसे सिखी का केन्द्र और बाऊली साहिब भी बनवाई।
मंडी सकेत की घटना ने साख गुरु की और बढ़ाई।
राजा खुद आया दर्शन को, निर्माण के लिए लकड़ी भिजवाई।
बाऊली साहिब चौरासी पौड़ियों वाली गुरों ने बनवाई।
मानव-जन्म सफल करने की, युक्ति संगत को

बतलाई।
तन-मन-आत्मा स्वच्छ बाणी को पढ़कर संगत करने लगी।
जपु जी साहिब की बाणी से जुड़कर, खाली झोलियां भरने लगी।
अकबर बादशाह ने सब फिरकों को, खुश रखने का संकल्प दोहराया।
लंगर की पंगत में बैठा, जब गुरु-दरबार में आया।
लंगर के लिए जागीर की पेशकश को, गुरु जी ने ठुकराया।
अंत में उसने उसी जागीर को, बीबी भानी के नाम लगाया।
देश भर के तीर्थों पर जाकर, सिखी का प्रचार किया।
परदा आदि पाखंडों का, गुरु जी ने तिरस्कार किया।
आत्मिक तीर्थ की महिमा, सब संगत को थी समझाई।
गुरमति के अनुरूप जीवन को, ढाल लेने की युक्ति बताई।
हुक्म सती-प्रथा के विरुद्ध, अकबर से जारी करवाया।
पर्दे और घूंघट पर, अंकुश भी लगवाया।
बढ़ने लगी उपमा गुरु अमरदास की, श्रद्धालु बहुत ही आते थे।
गुरु-घर की उन्नति के लिए, माया भी खूब चढ़ाते थे।
बेटा मोहरी फंसा माया में, तो सुधार की युक्ति बनाई।
चढ़ी माया गिनने की, खुद की ड्यूटी लगवाई।
माया खूब चढ़ी, गिनते-गिनते, हाथ हुए उसके काले।
गुरु जी ने तब उपदेश दिया, अरे माया के मतवाले!
गिनने से हुए हाथ हैं काले, मन साफ कहां रह पाएगा?
छोड़ो लालच नाम से लागो, जीवन सफल हो जाएगा।
पाखंडों पे किए प्रहार से, कट्टरपंथी नाराज हुए।
अकबर के दरबार में जा, दावे उन्होंने दायर किए।
भाई जेठा जी (गुरु रामदास जी) को, दे जवाब भिजवाया था।
इस तरह उन केसों का मर्म, अकबर को समझाया था।
जगत-सुधार का बीड़ा, तीसरे गुरु उठाया था।
सिखी का प्रचार किया, गुरु नानक मिशन बढ़ाया था।
लंबी आयु सफल बनाई भाई जेठा को वारिस बनाया था।
गुरमति ज्ञान को सतिगुरु जी ने, घर-घर तक फैलाया था।

हम धन्यवादी हैं राणा जसवंत सिंघ, इंदिरा नगर कालोनी, देहरादून के जिन्होंने ५३ परिवारों को 'गुरमति ज्ञान' का वार्षिक सद्स्य बनाकर गुरु-घर की खुशियां प्राप्त की हैं। हम उनकी चढ़दी कला के लिए वाहिगुरु के पास अरदास करते हैं।

-संपादक।

श्री गुरु तेग बहादर जी की बाणी में लोक-कल्याण की भावना

*-अमिता रेढू**

श्री गुरु तेग बहादर जी सिखों के नवम गुरु थे। इनका जन्म पंजाब के श्री अमृतसर नगर में श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी के घर हुआ। श्री गुरु तेग बहादर जी के जीवन पर उनके पिता जी का अत्यधिक प्रभाव था। अपने पिता जी के समान ही वे निडर एवं साहसी थे। आत्मविश्वास का भाव इनमें जन्मजात ही था। श्री गुरु तेग बहादर जी बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि थे और इनकी अध्ययन में अतीव रुचि थी। इन्होंने अनेक भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया तथा सूफी संत काव्य का गंभीर अध्ययन किया। संगीत और काव्य-रचना में श्री गुरु तेग बहादर जी की विशेष रुचि थी।

श्री गुरु तेग बहादर जी ने अपना समस्त जीवन त्याग एवं तपस्या में व्यतीत किया। सांसारिक विषय-वस्तुओं की लिप्सा इन्हें कदापि नहीं रही। इन्होंने अपना सारा जीवन समस्त सुख-ऐश्वर्य से परे आत्म-ज्ञान एवं लोक-कल्याण व लोक-रक्षा में व्यतीत किया। इन्होंने अपनी पावन बाणी में सांसारिक मोह-माया एवं ममता का त्याग करके शांतमयी जीवन का उपदेश दिया। गुरु-पद का भार ग्रहण करने पर वे मानव के कल्याण के कार्यों में जुट गए और संसार को शांति एवं सद्भाव की प्रेरणा दी। मानव-जीवन के कल्याण के लिए इन्होंने अपनी बाणी में लोक-भावना पर बल दिया और इसी लोक-भावना से ही मानव-जाति कल्याण के मार्ग पर अग्रसर हुई। लोक-कल्याण की भावना को सुदृढ़ करने हेतु गुरु जी की बाणी के विविध पक्ष इस प्रकार हैं :

लोभ

'लोभ' मानव-जीवन को अपनी ओर आकृष्ट करने वाला तत्त्व है। यह लोक-कल्याण-भावना के मार्ग का सर्वाधिक बाधक तत्त्व है। लोभ किसी भी पदार्थ का हो सकता है, यथा धन-सम्पत्ति का, प्रसिद्धि प्राप्ति का, किसी उच्च पद की प्राप्ति का अथवा अन्य किसी वस्तु की प्राप्ति का। लोभ के वशीभूत होकर मनुष्य अनेक कुकर्मों में लीन हो जाता है और पतन की ओर अग्रसर हो जाता है।

श्री गुरु तेग बहादर जी ने अपनी बाणी में मनुष्य को लोभ एवं मोह से दूर रहकर गुरु-सेवा का संदेश दिया है। जो प्राणी लोभ, मोह, ममता और अहंकार का त्याग कर देता है वह अपने आप तो इस संसार-चक्र से पार चला ही जाता है साथ ही दूसरों के लिए भी मार्ग प्रशस्त करता है।

धन-सम्पत्ति अथवा पद का लोभ मानव-मन को विचलित कर देता है और इसके लोभ में फंसा व्यक्ति स्वार्थी हो जाता है और वह धन संचित करने के लिए गलत कार्यों को करने लगता है। दुष्कृत्यों में फंसा व्यक्ति लोक-कल्याण के मार्ग से भ्रष्ट हो जाता है एवं पाप-मार्ग का अनुसरण करने लगता है। श्री गुरु तेग बहादर जी ने अपनी बाणी में लिखा है :

लोभ मोह माइआ ममता फुनि अउ बिखिअन की

**रीसर्च स्कॉलर, संस्कृत विभाग, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला।-१४७००२*

सेवा ॥
हरख सोग परसै जिह नाहनि सो मूरति है देवा ॥१॥
सुरग नरक अंम्रित बिखु ए सभ तिउ कंचन अरु पैसा ॥
उसतति निंदा ए सम जा कै लोभु मोहु फुनि तैसा ॥२॥
दुखु सुखु ए बाधे जिह नाहनि तिह तुम जानउ गिआनी ॥
नानक मुकति ताहि तुम मानउ इह बिधि को जो प्रानी ॥३॥ (पन्ना २२०)

लोभ एवं मोह में फंसा व्यक्ति निंदा का पात्र होता है। दुख और सुख में समभाव वाला व्यक्ति ही ज्ञानी कहलाता है और उसी को मुक्ति मिलती है। लोभ से विरक्त होकर ही मनुष्य लोक-कल्याण कर सकता है। अत: लोक-कल्याण की प्रशस्ति के लिए लोभ का त्याग अत्यधिक आवश्यक है।

काम-क्रोध

लोभ के साथ-साथ काम और क्रोध भी लोक-कल्याण की भावना के बाधक हैं। श्री गुरु तेग बहादर जी ने अपनी बाणी में काम-क्रोध और दुर्जन की संगति के त्याग का भी संदेश दिया है। काम-क्रोध मानव-मन के सबसे बड़े शत्रु हैं और इनके वशीभूत होकर मनुष्य अपना भला-बुरा समझने की शक्ति खो देता है। ऐसा व्यक्ति मानव-कल्याण के विषय में नहीं सोच सकता। अत: लोक-कल्याण की भावना के लिए काम-क्रोध का त्याग करना आवश्यक है। श्री गुरु तेग बहादर जी गउड़ी राग में अंकित बाणी में फरमान करते हैं :

साधो मन का मानु तिआगउ ॥
कामु क्रोधु संगति दुरजन की ता ते अहिनिसि भागउ ॥१॥रहाउ॥
सुखु दुखु दोनो सम करि जानै अउरु मानु अपमाना ॥
हरख सोग ते रहै अतीता तिनि जगि ततु पछाना ॥२॥
उसतति निंदा दोऊ तिआगै खोजै पदु निरबाना ॥
जन नानक इहु खलु कठनु है किनहूं गुरमुखि जाना ॥२॥ (पन्ना २१९)

मान-अपमान, काम-क्रोध व दुर्जन संगति में फंसे व्यक्ति को अंत में पछताना पड़ता है। काम-क्रोध के वशीभूत मनुष्य नेत्र होते हुए भी नेत्रहीन के समान हो जाता है जिसे अपने भले-बुरे की पहचान नहीं रहती। ऐसा व्यक्ति भौतिक जगत् की विषय-वाशनाओं में पड़कर अपने मार्ग से भटक जाता है। वह मात्र अपनी इच्छाओं की पूर्ति में लगा रहता है और लोक-कल्याण के विषय से उसका ध्यान भटक जाता है। अत: मनुष्य को काम-क्रोध का त्याग कर लोक-कल्याण की भावना को प्रशस्त करना चाहिए और लोक-कल्याण के मार्ग पर अग्रसर होना चाहिए।

मोह-माया

लोक-कल्याण की भावना में मोह-माया की अत्यधिक बाधा बनती है। माता-पिता, पुत्र, भाई-बन्धुओं के मोह में फंसा व्यक्ति इन बंधनों से परे हटकर लोक-कल्याण के विषय में नहीं सोच सकता। इस मायावी जगत में मनुष्य माया के वशीभूत होकर एक मृगतृष्णा में फंसकर रह जाता है। वह यह भूल जाता है कि यह सम्पूर्ण दृश्यमान जगत् ईश्वर की माया है और यह अनित्य और नश्वर है। इस विषय में श्री गुरु तेग बहादर जी फरमान करते हैं :

प्रानी कउ हरि जसु मनि नही आवै ॥
अहिनिसि मगनु रहै माइआ मै कहु कैसे गुन गावै ॥१॥रहाउ॥

पूत मीत माइआ ममता सिउ इह बिधि आपु बंधावै ॥
म्रिग त्रिसना जिउ झूठो इहु जग देखि तासि उठि धावै ॥२॥
भुगति मुकति का कारनु सुआमी मूड़ ताहि बिसरावै ॥
जन नानक कोटन मै कोऊ भजनु राम को पावै ॥२॥३॥ *(पन्ना २१९)*

माया से यहां तात्पर्य लौकिक धन से भी है। संसार में अपनी आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को धन की आवश्यकता रहती है। धन-संपत्ति की प्राप्ति के लिए मनुष्य अपने जीवन में बुरे कर्मों को भी करता है। धन की प्राप्ति होने पर भी मानव मन में और धन की इच्छा बनी रहती है। यह तृष्णा मानव को बुरे कर्म करने के लिए प्रेरित करती है। इससे वह व्यक्ति दुष्कृत्यों में फंस जाता है और लोक-कल्याण के मार्ग से विमुख हो जाता है। धन के मद में अन्धा मनुष्य मानवता को खो देता है। धनी व्यक्ति के चारों तरफ चापलूस उसी प्रकार से एकत्रित हो जाते हैं जिस प्रकार गुड़ के चारों तरफ चींटे। श्री गुरु तेग बहादर जी ने अपनी बाणी में धन को महत्त्व न देकर मुक्ति-मार्ग को अपनाने का संदेश देते हुए कहा है :

धनु दारा संपति सगल जिनि अपुनी करि मानि ॥
इन मै कछु संगी नही नानक साची जानि ॥ *(पन्ना १४२६)*
उसतति निंदिआ नाहि जिहि कंचन लोह समानि ॥
कहु नानक सुनि रे मना मुकति ताहि तै जानि ॥ *(पन्ना १४२७)*

इस प्रकार लोक-कल्याण की भावना में मोह-माया एक बाधक तत्त्व है। इस मोह-माया के बंधन को त्याग कर ही मनुष्य लोक-कल्याण के मार्ग की ओर अग्रसर हो सकता है।

अभिमान

अभिमान भी लोक-कल्याण की भावना का बाधक तत्त्व है। अभिमान अथवा अहंकार मानव का विकट शत्रु है। अभिमानी व्यक्ति अपने अभिमान को पूरा करने के लिए ऐसे कार्यों को कर बैठता है जिसके फलस्वरूप उसे अंत में पछताना पड़ता है। अपने अहंकार को पूर्ण करने हेतु वह किसी भी वस्तु अथवा प्राणी की परवाह नहीं करता और अपने अहंकार की अग्नि में अपना सब कुछ गंवा बैठता है। ऐसा व्यक्ति लोक-कल्याण के विषय में सोच भी नहीं सकता। अहंकार के कारण मनुष्य आंखें होते हुए भी देख नहीं सकता। ऐसे व्यक्ति का सम्पूर्ण नाश हो जाता है, यथा रावण के अहंकार के फलस्वरूप लंका का नाश हो जाता है। दुर्योधन भी आंखें होते हुए अहंकार के मद में अंधा हो जाता है और कौरवों के नाश का कारण बनता है। अहंकार जिस किसी की आत्मा पर सवार हो जाता है वह अंधा माना जाता है। अहंकार आत्मा और परमात्मा के मध्य दीवार का कार्य करता है। अहंकार-शून्य होकर ही मानव लोक-कल्याण में प्रवृत्त होता है एवं अपने जीवन को पूर्णता की ओर ले जाता है। श्री गुरु तेग बहादर जी ने अपनी बाणी में मानव-जीवन को सफल बनाने के लिए अभिमान-त्याग को आवश्यक बताया है। उनके अनुसार अभिमान का त्याग करके ही व्यक्ति लोक-कल्याण के मार्ग पर अग्रसर हो सकता है। उन्होंने गउड़ी राग में अंकित अपनी बाणी में लिखा है:

जो प्रानी ममता तजै लोभ मोह अहंकार ॥
कहु नानक आपन तरै अउरन लेत उधार ॥ *(पन्ना १४२७)*

तथा :

साधो मन का मानु तिआगउ ॥
. . . गुरमुखि जाना ॥ (पन्ना २१९)

अतएव मनुष्य को अपने अभिमान का त्याग करके लोक-कल्याण के मार्ग को प्रशस्त करना चाहिए।

स्वार्थ

स्वार्थ की भावना प्रत्येक व्यक्ति में होती है, किन्तु जब मनुष्य स्वार्थ के वशीभूत होकर अन्य मनुष्यों से ईर्ष्या करने लगे तो यह स्वार्थ लोक-कल्याण की भावना में बाधक बन जाता है। स्वार्थ में अंधा मनुष्य अच्छे-बुरे की पहचान भूल जाता है और अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए दूसरों को हानि पहुंचाना प्रारंभ कर देता है। स्वार्थ एक ऐसा रोग है जिससे व्यक्ति स्वयं को आसानी से मुक्त नहीं करवा सकता। स्वार्थी व्यक्ति अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए बुरे से बुरे कर्म को करने में भी संकोच नहीं करता। ऐसा व्यक्ति लोक-कल्याण के मार्ग से विचलित हो जाता है। स्वार्थी व्यक्ति मात्र अपने-अपने परिवार, मित्र अथवा जाति के विषय में ही सोचता है। उसके अंतःकरण में राष्ट्र अथवा मानव-मात्र के कल्याण की भावना समाप्त होने लगती है, जिससे राष्ट्रीय एकता पर भी खतरा मंडराने लगता है। स्वार्थ के वशीभूत होकर मनुष्य अपने समाज तथा राष्ट्र के प्रति कर्त्तव्यों को भुला कर केवल अपने लिए कार्य करता है और इसके लिए राष्ट्र-द्रोह करने में भी संकोच का अनुभव नहीं करता। स्वार्थ घुन लगी लकड़ी की भांति मानव को अंदर-बाहर से खोखला कर देता है और ऐसे व्यक्ति के जीवन-मूल्य समाप्त हो जाते हैं।

श्री गुरु तेग बहादर जी ने स्वार्थी व्यक्ति को सचेत करते हुए देवगंधारी राग में लिखा है:

जगत मै झूठी देखी प्रीति ॥
अपने ही सुख सिउ सभ लागे किआ दारा किआ मीत ॥१॥रहाउ॥
मेरउ मेरउ सभै कहत है हित सिउ बाधिओ चीत ॥
अंति कालि संगी नह कोऊ इह अचरज है रीति ॥१॥
मन मूरख अजहू नह समझत सिख दै हारिओ नीत ॥
नानक भउजलु पारि परै जउ गावै प्रभ के गीत ॥२॥ (पन्ना ५३६)

इस संसार में सभी बंधन स्वार्थ से परिपूर्ण हैं। अपने स्वार्थ एवं सुख के लिए ही सब प्रयत्नशील हैं। वह चाहे पत्नी हो अथवा मित्र, सबका प्रेम एक दिखावा मात्र है। उनमें सच्चे एवं वास्तविक प्रेम का अभाव है। सच्चे प्रेम का पता मुसीबत के समय ही लगता है। ये अपने संबंधी, मित्र, पुत्र, पत्नी आदि मात्र अपने हित एवं लाभ के लिए व्यक्ति से जुड़े रहते हैं। अंत समय में कोई भी व्यक्ति के साथ नहीं जाता, वह अकेला ही इस संसार से जाता है। मृत्यु ही हमारे समक्ष जीवन के इस कटु सत्य को उद्घाटित करती है। मनुष्य इतना मूर्ख है कि बुद्धि के द्वारा मन को निरंतर इस विषय में बार-बार सचेत करवाए जाने पर भी इस मोह-माया के बंधन को छोड़ने को तैयार नहीं होता। श्री गुरु तेग बहादर जी फरमान करते हैं कि यदि इतना प्रेम व्यक्ति ईश्वर से करता तो अवश्य ही इस संसार-चक्र से पार हो जाता।

श्री गुरु तेग बहादर जी ने स्वार्थ से बचने का मार्ग भक्ति को कहा है। प्रभु-भक्ति ही मानव को स्वार्थ से बचा सकती है। उनके अनुसार मानव-देह अत्यंत दुर्लभ है। इसे प्रभु-भक्ति में लगाना चाहिए तथा लोक-कल्याण के कार्य करने चाहिए :

जउ सुख कउ चाहै सदा सरनि राम की लेह ॥
कहु नानक सुनि रे मना दुरलभ मानुख देह ॥
(पन्ना १४२७)

तथा :

कहउ कहा अपनी अधमाई ॥
उरझिओ कनक कामनी के रस नह कीरति प्रभ गाई ॥१॥रहाउ॥ *(पन्ना ७१८)*

स्वार्थ की भावना का त्याग करके ही मानव लोक-कल्याण के मार्ग को प्रशस्ति प्रदान कर सकता है। अत: लोक-कल्याण की भावना के लिए स्वार्थ का त्याग आवश्यक है।

प्रेम

लोक-कल्याण की भावना के लिए सबसे आवश्यक तत्त्व प्रेम है। सम्पूर्ण संसार को वश में करने का मूल-मंत्र प्रेम ही है। प्रेम ही समाज को सुख, शांति एवं समृद्धि की ओर अग्रसर करता है। ईर्ष्यावश अथवा शत्रुतापूर्ण व्यवहार करने से मनुष्य विद्रोही हो जाता है एवं हिंसा के मार्ग को अपना लेता है। इतिहास भी इस बात का साक्षी है कि युद्ध, विवाद एवं कलहों का मूल कारण मनुष्य में प्रेम का अभाव ही है। प्रेम-भाव की न्यूनता के कारण समाज में एक विषमता व्याप्त हो जाती है। एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति का दुश्मन बन जाता है और उसे हानि पहुंचाने में तनिक भी संकोच नहीं करता। किन्तु किसी भी व्यक्ति का प्रेमपूर्ण व्यवहार मानव को तो प्रभावित करता ही है इसके साथ-साथ पशु-पक्षियों को भी वशीभूत कर लेता है। प्रेम के वशीभूत होकर हिंसक से हिंसक प्राणी भी हिंसा को छोड़कर प्रेमपूर्ण व्यवहार करने वाले के वशीभूत हो जाता है। आज समाज में फैली अराजकता एवं वैमनस्य को प्रेम की भावना से ही दूर किया जा सकता है। मनुष्य इस जगत को युद्ध से नहीं अपितु प्रेम से एक सूत्र में बांध सकता है और यह लोक-कल्याण के लिए अति आवश्यक भी है।

श्री गुरु तेग बहादर जी की बाणी मनुष्य के समक्ष इसी संदेश को रखती है। उनके अनुसार भगवान् घट-घट में विद्यमान है अर्थात् सर्वत्र विद्यमान है। इस प्रकृति के कण-कण में प्रभु की विद्यमानता है। इस बात को जानकर तथा मानव-मात्र के प्रति प्रेम की भावना रखने से मनुष्य लोक-कल्याण की भावना से ओत-प्रोत होगा तथा इस संसार को पार कर जाएगा अर्थात् संसार के बंधनों से मुक्त होकर मोक्ष प्राप्त करेगा। साथ ही उसका जीवन शांति का प्रतीक बन जाएगा :

घट घट मै हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि ॥
कहु नानक तिह भजु मना भउ निधि उतरहि पारि ॥ *(पन्ना १४२७)*

अत: लोक-कल्याण की भावना के लिए प्रेम का होना अनिवार्य है। प्रेम के सूत्र में बंधकर ही समाज और राष्ट्र एक होकर प्रगति कर सकते हैं।

उदारता

लोक-कल्याण की भावना के लिए मानव-मनों में उदारता का होना भी अत्यावश्यक है। प्राणी-मात्र के प्रति दयापूर्ण व्यवहार एवं उदार दृष्टिकोण ही मानव-मन में एक-दूसरे के प्रति प्रेम एवं सद्भाव को उत्पन्न करता है तथा वैमनस्य-रहित शांतिपूर्ण समाज का सृजन करता है। श्री गुरु तेग बहादर जी ने अपनी बाणी में मानव को पाप के कार्यों से डर कर रहने तथा प्राणी-मात्र पर उस परमात्मा के समान ही दया एवं उदार भाव का संदेश देते हुए गउड़ी राग में फरमाया है :

नर अचेत पाप ते डरु रे ॥
दीन दइआल सगल भै भंजन सरनि ताहि तुम

परु रे ॥१॥रहाउ॥
बेद पुरान जास गुन गावत ता को नामु हीऐ मो धरु रे ॥
पावन नामु जगति मै हरि को सिमरि सिमरि कसमल सभ हरु रे ॥१॥
मानस देह बहुरि नह पावै कछू उपाउ मुकति का करु रे ॥
नानक कहत गाइ करुना मै भव सागर कै पारि उतरु रे ॥२॥६॥२५४॥ *(पन्ना २२०)*

मनुष्य को पाप से डरना चाहिए एवं पापपूर्ण आचरण से मुक्त होकर रज एवं तम गुणों का त्याग कर सत्त्व गुणों को अपनाना चाहिए, क्योंकि सत्त्वगुणी व्यक्ति ही परमात्मा की कृपा एवं दयालुता का पात्र होता है और उस प्रभु की कृपा से ही मनुष्य इस भवसागर को पार कर सकता है। अपने जीवन में दया एवं उदारता के भावों को अपना लेने से ये भाव मन के विकारों को शांत कर देते हैं और लोक-जीवन में भी व्याप्त हो जाते हैं। जिस प्रकार चंदन के वृक्ष की संगति से अन्य सामान्य वृक्ष भी सुगन्धित हो जाते हैं अथवा सूर्य के प्रकाश से इस पृथ्वी का अंधकार समाप्त हो जाता है उसी प्रकार दया एवं उदारता के भाव भी मानव-मन को पवित्र एवं सुगंधित कर लोक-कल्याण की भावना को प्रकट करते हुए शांति प्रदान करते हैं। इन भावों को अपना कर मनुष्य में हर्ष एवं शोक के भाव नहीं रहते और उसके शत्रु भी मित्र बन जाते हैं। श्री गुरु तेग बहादर जी ने अपनी बाणी में फरमान किया है :

हरखु सोगु जा कै नही बैरी मीत समानि ॥
कहु नानक सुनि रे मना मुकति ताहि तै जानि ॥ *(पन्ना १४२७)*

इस प्रकार दया एवं उदारतापूर्ण व्यवहार मानव को लोक-कल्याण के मार्ग की ओर अग्रसर करता है और समाज में शांति स्थापित करने में सहायक बनता है।

मन की स्वच्छता

लोक-कल्याण की भावना के लिए सबसे आवश्यक तत्त्व है—मन की स्वच्छता। जब मानव-मन स्वच्छ होगा तभी लोक जीवन भी स्वच्छ होगा। मानव-मन की स्वच्छता के लिए आवश्यक है काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार का त्याग कर अपनी इन्द्रियों को अपने वश में करना, क्योंकि यदि मनुष्य की इन्द्रियां उसके वश में न होकर विषयोन्मुख होंगी तो लोक में अशान्ति का वास होगा। विषयों के प्रति आसक्त मनुष्य उनकी पूर्ति के लिए बुरे कर्मों को करेगा। बुरे कर्मों के फलस्वरूप लोक में अराजकता एवं वैमनस्य का विस्तार होगा तथा लोक-जीवन अशांत हो जाएगा। इसीलिए महापुरुषों ने समय-समय पर मनुष्यों को अपने मन को वश में कर पवित्र कार्यों में लगाने का संदेश दिया है। मानव की इच्छाओं की कोई सीमा नहीं है और यही इच्छाएं संसार को युद्ध की ज्वाला में भी झोंक देती हैं।

इसलिए श्री गुरु तेग बहादर जी ने लोक-कल्याण के लिए मन को वश में कर त्यागमय जीवन जीने का उपदेश दिया। विषय-वासनाओं में लिप्त एवं अज्ञानी मानव को सचेत करते हुए श्री गुरु तेग बहादर जी फरमान करते हैं कि जिस शरीर के सुख के लिए मनुष्य दिन-रात पाप-कर्म करता है, अंतिम समय में वह शरीर भी आत्मा का साथ छोड़ देता है, माता-पिता, पुत्र, भाई-बंधु का तो कहना ही क्या! इसलिए मनुष्य को अपने जीवन को सार्थक बनाने के लिए विषय-वासनाओं का त्याग कर अपने मन को स्वच्छ कर परमात्मा का सिमरन करना

चाहिए तथा लोक-कल्याण के मार्ग पर अग्रसर होना चाहिए :

जाग लेहु रे मना जाग लेहु कहा गाफल सोइआ ॥
जो तनु उपजिआ संग ही सो भी संगि न होइआ ॥१॥रहाउ॥
मात पिता सुत बंध जन हितु जा सिउ कीना ॥
जीउ छूटिओ जब देह ते डारि अगनि मै दीना ॥१॥
जीवत लउ बिउहारु है जग कउ तुम जानउ ॥
नानक हरि गुन गाइ लै सभ सुफन समानउ ॥२॥२॥
(पन्ना ७२६)

तथा :

हरि जसु रे मना गाइ लै जो संगी है तेरो ॥
अउसरु बीतिओ जातु है कहिओ मान लै मेरो ॥१॥रहाउ॥
संपति रथ धन राज सिउ अति नेहु लगाइओ ॥
काल फास जब गलि परी सभ भइओ पराइओ ॥१॥
जानि बूझ कै बावरे तै काजु बिगारिओ ॥
पाप करत सुकचिओ नही नह गरबु निवारिओ ॥२॥
जिह बिधि गुर उपदेसिआ सो सुनु रे भाई ॥
नानक कहत पुकारि कै गहु प्रभ सरनाई ॥३॥३॥
(पन्ना ७२७)

प्रस्तुत पद में गुरु जी मानव को यह संदेश देते हैं कि मानव जिस धन-संपत्ति से अत्यधिक स्नेह करता है और उसे प्राप्त करने के लिए अनेक पाप-कर्म करता है, काल का ग्रास बन जाने पर तो यह सम्पत्ति यहीं रह जाएगी, कोई भी उसे अपने साथ नहीं ले जा सकता वह तो इसी संसार में रह जाएगी। किन्तु यदि मनुष्य लोक-कल्याण के कार्य करता है और प्रभु-भक्ति करता है तो मृत्यु के पश्चात भी उसका यश इस संसार में फैलेगा। मनुष्य के शुभ कर्म इस संसार में सबके द्वारा लंबे समय तक याद रखे जाएंगे। इसलिए मनुष्य को पाप-कर्म त्याग कर शुभ कर्मों को करते हुए मानवता की भलाई के कार्यों को करना चाहिए। इसी बात का संदेश श्री गुरु तेग बहादर जी अपनी बाणी में देते हैं।

श्री गुरु तेग बहादर जी ने अपनी बाणी में संसार की असारता एवं नश्वरता को बताते हुए लोक जीवन के कल्याण के लिए मनुष्य को काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार एवं स्वार्थ की भावना को त्याग कर त्याग, उदारता, दयालुता एवं प्राणी-मात्र से प्रेम का संदेश दिया है। उनके अनुसार प्रेम एवं सद्भाव ही एक ऐसा मार्ग है जो लोक-जीवन को शांतिमय बना सकता है। अहंकार, स्वार्थ आदि विकार मानव-मन को विकृत कर लोक-जीवन में अशांति फैलाते हैं, किन्तु त्याग एवं बलिदान से ही लोक में शांति की स्थापना होती है।

श्री गुरु तेग बहादर जी में भी लोक-कल्याण की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी। औरंगजेब ने मदांध होकर गुरु जी को कैद कर लिया और अनेक प्रकार के प्रलोभनों से उन्हें तोड़ना चाहा, किन्तु गुरु जी अडिग रहे। तब औरंगजेब ने पहले उनके सामने उनके सिखों को अनेक प्रकार के कष्ट देते हुए शहीद किया। गुरु जी ने शहीदी पाकर समय के पीड़ित धर्म की रक्षा की, लोक-कल्याण की भावना को सर्वोपरि रखते हुए स्थिरता के भाव को बनाए रखा तथा लोक-चेतना को प्रबुद्ध किया। ऐसे ही त्याग एवं बलिदान की भावना जन-जन में जागृत हो वे यही चाहते थे और उन्होंने यही संदेश इस संसार को दिया तथा लोक-कल्याण की भावना को सुदृढ़ किया।

सिख मत तथा सात घाटियां

*-डॉ. हरनाम सिंघ**

इस संसार के सभी धर्मों में एक निश्चित और सुदृढ़ पूर्व-स्थापित मान्यता देखी जा सकती है। वह यह कि धर्म में साधक या जीव का आध्यात्मिक जीवन, मुकाम या लक्ष्य तक पहुंचने की एक गूढ़ और अनोखी रहस्यमयी यात्रा होता है। यह यात्रा अपने मूल उद्गम 'मैं' से प्रारंभ होकर, कुछ निश्चित नियमों, गुणों को धारण करती है और अनेक विकारों, बुराइयों का त्याग करते हुए, आत्म-शक्ति प्राप्त करते हुए, अनेक परीक्षाएं देते हुए जो 'मैं नहीं हूं' पर समाप्त होती है। इस मुकाम पर साधक के जिस नवीन जीवन का आविर्भाव होता है उसकी अनुभूति अद्‌भुत और अवर्णनीय होती है।

सिख मत में पावन श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी से कुछ मूल, प्रमुख प्रत्ययों को लेकर हम इस यात्रा को समझ सकते हैं तथा सिख मत के स्वरूप को एक भिन्न आयाम से जान सकते हैं। श्री गुरु नानक देव जी का इस सुंदर यात्रा के संदर्भ में फरमान है :

जप तप का बंधु बेड़ुला जितु लंघहि वहेला ॥
ना सरवरु ना ऊछलै ऐसा पंथु सुहेला ॥
(पन्ना ७२९)

सिख को शबद रूपी पथ का निर्धारण कर इस यात्रा की सात घाटियों को पार करना पड़ता है। इन सात घाटियों का आरोहण रूपी स्वरूप साधना के निम्न स्तरों द्वारा प्रकट किया जा सकता है :

विभिन्न घाटियों का क्रम	*अनुभूति के आरोहण के स्तर*
पहली घाटी	प्यास/शबद
दूसरी घाटी	शरण
तीसरी घाटी	हउमै-त्याग
चौथी घाटी	सेवा/सरबत्त दा भला
पांचवीं घाटी	भाणा (हुक्म)
छठी घाटी	मीरी-पीरी
सातवीं घाटी	हुक्म/ब्रह्मज्ञानी

इस आध्यात्मिक यात्रा पर निकल पड़ने की पहली शर्त सिख पंथ के सम्मानीय भाई गुरदास जी बतलाते हैं कि सिख या साधक को मुर्दे के समान मुरीद बनकर गुरु का पल्ला पकड़ना होता है :

मुरदे वांगु मुरीद होइ . . .। (वार २८:६)

पहली घाटी प्यास की घाटी। गहन प्यास और पावन शबदों को समझने का भाव प्रबल होना चाहिए। यह प्यास उत्प्रेरक है। उस अदृष्ट, अगोचर की अनुभूति शबद अथवा उसके भाव के धारण द्वारा संभव है।

अद्रिसटु अगोचरु पकड़िआ गुर सबदी . . . ॥
(पन्ना १११४)

इसलिए दिन-रात उस अकाल पुरख की प्यास दिल में सहेजते हुए शबद में लीन रहना होता है। इस प्यास रूपी वेदना का वर्णन श्री गुरु नानक देव जी ने इस प्रकार किया है :

अहिनिसि जागै नीद न सोवै ॥
सो जाणै जिसु वेदन होवै ॥
प्रेम के कान लगे तन भीतरि वैदु कि जाणै कारी जीउ ॥ (पन्ना ९९३)
—खाणा पीणा हसणा सउणा विसरि गइआ है मरणा ॥
खसमु विसारि खुआरी कीनी ध्रिगु जीवणु नही रहणा ॥ (पन्ना १२५४)

इस पहली प्यास की घाटी को जिज्ञासु जब

*सहा. प्राध्यापक (दर्शन शास्त्र), शास. दिग्विजय महाविद्यालय, राजनांदगांव (छ. ग.)

पार कर लेता है तो उसे इस ब्राह्मांड के प्रत्येक अस्तित्व में उस अकाल पुरख की ज्योति का आभास होता है और वह अरदास कर अपने को शरणागत करते हुए उसके पावन द्वारे में जाकर माथा टेककर कृतकृत्य होता है। यह दूसरी शरण की घाटी है :

मेरे ठाकुर केते अगनत उधारे ॥
मोहि दीन अलप मति निरगुण परिओ सरणि दुआरे ॥ (पन्ना ९९९)

इस दूसरी घाटी की समाप्ति पर अन्तर्ज्ञान होता है कि वह अहंकार या हउमै, जिसका त्याग हो चुका मान लिया गया है, वह तो सूक्ष्म होकर अंतर-जगत् को संचालित कर रहा है। इस हउमै के कारण, पहली दो घाटियों को पार करने वाला सिख आंतरिक व्यक्तित्व में स्वयं को विशिष्ट मानने लगता है और अपरोक्षत: दूसरों पर इसका प्रकटावा भी करने लगता है। जिज्ञासु को इस तीसरी घाटी में हउमै के इस विशाल और अदृश्य जाल का ज्ञान होता है, जो उसे किसी न किसी रूप में सदैव जकड़ रहा है :

—हउमै बूझै ता दरु सूझै ॥
गिआन विहूणा कथि कथि लूझै ॥ (पन्ना ४६६)
—अंतरि अलखु न जाई लखिआ
विचि पड़दा हउमै पाई ॥ (पन्ना २०५)

तीसरी घाटी में हउमै के जाल को काटकर सिख साधक अथवा जिज्ञासु पूरी तरह निर्भार, सहज, अहंविहिन हो चुका है। चौथी घाटी में प्रवेश के साथ ही उसे अकाल पुरख ने अपने प्रकाशत्व की झलक देनी प्रारंभ कर दी है। यह सेवा की घाटी है, इस घाटी में सिख के हृदय में करुणा का नि:सृत प्रवाह हो रहा है। वह सारी सृष्टि से अपने प्रेम को सेवा के माध्यम से अभिव्यक्त करने लगता है। उसके अंदर कोमलता रूपी परम प्रेममयी, सत्य के पौधे का प्रस्फुटन हो चुका है, जिसे भक्त कबीर जी ने दर्ज किया है :

—सहज सुंनि इकु बिरवा उपजिआ धरती जलहरु सोखिआ ॥
कहि कबीर हउ ता का सेवकु जिनि इहु बिरवा देखिआ ॥ (पन्ना ९७०)
—मुकति भुगति जुगति तेरी सेवा जिसु तूं आपि कराइहि ॥ (पन्ना ७४९)
—जिचरु अंदरि सासु तिचरु सेवा कीचै जाइ मिलीऐ राम मुरारी ॥ (पन्ना ९११)

अब पांचवीं घाटी में सिख के पास सूक्ष्म अन्तर्दृष्टि तथा शक्ति का संग्रह हो चुका है। वह गूढ़ रहस्यों को बूझ सकता है। लेकिन उसने उस संकल्प-शक्ति का त्याग कर दिया है, जिसमें इच्छा मात्र से वाह्य अनुकूलता आ जाती है। वह अपनी शक्ति का दुरुपयोग न कर सिर्फ निष्काम स्वीकरण में अटूट विश्वास रखता है, क्योंकि वह जान चुका है कि जो कुछ घटित हो रहा है वह उस अकाल पुरख रूपी, पूरन ज्योति का प्रकटीकरण है, इसलिए वह उसके विरुद्ध नहीं जाता। यह पांचवीं घाटी भाणे की घाटी है, जहां सिख, साधक, प्रतिकूल, कष्टदायी ही नहीं खतरनाक स्थितियों में भी सहज, अविचलित, स्थिर तथा अडोल रहता है :

गुर का सबदु मनै महि मुंद्रा खिंथा खिमा हढावउ ॥
जो किछु करै भला करि मानउ सहज जोग निधि पावउ ॥ (पन्ना ३५९)

इस सर्वोत्तम सहज अवस्था के पश्चात छठी घाटी सिख मत में मीरी-पीरी की घाटी है जिसे परीक्षा की घाटी कह सकते हैं। यह परीक्षा संतुलन साधने की घाटी है अर्थात् सिख जहां आध्यात्मिक ऊंचाइयों तक पहुंच चुका है वहीं उसने सांसारिक कर्त्तव्यों का पालन भी ईमानदारीपूर्वक किया है। वह सामाजिक उत्तरदायित्वों से विमुख नहीं हुआ है। यह मीरी-पीरी रूपी छठी घाटी ऐसी है जहां से फिसलकर साधक पुन: वापस पूर्वावस्था में जा सकता है, अत: सचेत और सतर्क रहकर, विवेक बुद्धि का प्रयोग करते हुए साधक को संसार और आध्यात्म के मध्य संतुलन स्थापित करना है।

यह उसकी कठिन परीक्षा है :

—नामा कहै तिलोचना मुख ते राम संम्हालि ॥
हाथ पाउ करि कामु सभु चीतु निरंजन नालि ॥
(पन्ना १३७५-७६)

—सतिगुर की ऐसी वडिआई ॥
पुत्र कलत्र विचे गति पाई ॥ (पन्ना ६६१)

इस छठी घाटी को, जो परीक्षा और संयम की घाटी है, यदि सिख साधक पार कर ले तो वह अकाल पुरख के हुक्म को जान लेता है और सातवीं घाटी में प्रवेश करता है तथा ऐसा ब्रह्मज्ञानी साधक अपने मालिक, प्रियतम के वचनों को पहचान कर महामिलन कर लेता है, यही उसका मुकाम व चरम मूल अवस्था या स्वरूप है :

—एको नामु हुकमु है नानक सतिगुरि दीआ बुझाइ जीउ ॥ (पन्ना ७२)

—प्रिअ के बचन सुखाने हीअरै इह चाल बनी है भली ॥
लटुरी मधुरी ठाकुर भाई ओह सुंदरि हरि ढुलि मिली ॥ (पन्ना ५२७)

उपर्युक्त घाटी रूपी सात सद्गुणों द्वारा सिख दर्शन को समझने का एक छोटा-सा प्रयास किया जा सकता है। इसमें प्रथम तीन घाटियां भाव या भक्तिपरक और तत्पश्चात की तीन घाटियां कर्मपरक तथा अंतिम घाटी ज्ञान स्वरूप है। इस प्रकार सिख मत में भक्ति, कर्म और ज्ञान का सर्वोत्तम सुमेल है।

कविताएं

नदी हो गई रेत

*-श्री प्रभु त्रिवेदी**

मिनरलवाटर पी गया, हर पंथी की प्यास।
प्याऊ बेचारी थकी, ले बैठी सन्यास।
आखिर किससे जा कहे, सागर अपनी बात?
सारे जग की क्रूरता, झेल रहा दिन-रात।
अपने जल से आज तक, बुझा न पाया प्यास।
सागर के इस दर्द का, कैसे हो आभास?
कुएं, बावड़ी रिक्त हैं, नदी हो गई रेत।
ट्यूबवेल दे सूखकर, संकट के संकेत।
जल सृष्टि का मूल है, जल से है निर्माण।
जल से जीवित जंतु सब, जल प्राणों का प्राण।
संतों की इस बात को, खूब समझ लें आप।
पानी जैसा राखिए, सबसे मेल-मिलाप।
सागर-सा गंभीर हो, नदियों सा गतिमान।
जल जैसा निर्मल रहे, ऐसा व्यक्ति महान।
गंगा के इस दर्द का, कैसे करें बखान?
आओ कायम करें पुनः नदियों का सम्मान।

**'प्रणम्य', १११, राम रहीम कालोनी, राऊ, इंदौर (म. प्र.)*

गुरु का लंगर

*-डॉ. सुरिंदरपाल सिंघ**

गुरु का लंगर, सर्व सांझ की जय-जयकार।
गुरु का लंगर, शबद साधना ऊंचा संस्कार।
आदि गुरदेव जी का, नव नवीन विचार।
मिल बैठ पकाना, संचय कर प्रेम प्यार।
मिल बैठ छकना, कर मानवता संचार।
ऊंच-नीच भेद भूल, उदय कर नव सहचार।
सभी को प्यार, सभी को देना सत्कार।
मानस की जात सब, एक का विस्थार।
शान की रोटी, स्वाभिमान का परशादा,
नेम किरत कर्म, गुर-फलसफा आधार।
राजा रंक जात-पात, शोर करे संसार।
सारे मिटें अभिमान, आकर गुरु द्वार।
आदि गुरदेव जी महान, आधारा आधार।
बहुत-बहुत वंदना, अनिक बार, बारंबार।

**पत्तण वाली सड़क, पुराणा शाला, जिला गुरदासपुर।*
मो. ९४१७१-७५८४६

गुरसिखी बारीक है . . . ।

*-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ**

भाई गुरदास जी गुरबाणी के शिरोमणि व्याख्याकार के रूप में उच्च पद प्राप्त ऐसे महान पुरुष हैं जिनकी बाणी को गुरबाणी के समुचित सन्दर्भ समझने के लिये प्रयोग किया जाता है। ऐसा आदर उन्हें स्वयं पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने प्रदान किया था। भाई गुरदास जी ने गुरसिख की महिमा का वर्णन विस्तार से किया है। वे कहते हैं कि लाखों साधक ध्यान-साधना करते हैं, किन्तु गुरसिख के स्वरूप को नहीं पा सकते। लाखों ज्ञानी ज्ञान अर्जित करते हैं किन्तु उनकी सोच भी एक गुरसिख की सोच तक नहीं पहुंच पाती। बुद्धि, बल, विवेक आदि कितने ही गुण धारण कर लें, कितने भी योग, वैराग्य में लिप्त हो लें, परमात्मा के कई रूप देख लें, किन्तु परमात्मा की निकटता का जैसा आनन्द एक गुरसिख के मन में व्याप्त रहता है, उसका रंचमात्र भी उन्हें प्राप्त नहीं हो पाता। भाई गुरदास जी बात को स्पष्ट करते हैं कि जिस गुरसिखी की इतनी महिमा है उसका मार्ग भी उतना ही कठिन है:

वालहु निकी आखीऐ खंडे धारहु सुणीऐ तिखी।
आखणि आखि न सकीऐ लेख अलेख न जाई लिखी। *(वार २८:१)*

गुरसिख का मार्ग बाल से भी बारीक और खड़ग की धार से भी अधिक तीक्ष्ण है, जिसको न तो बोलकर बताया जा सकता है और न ही शब्दों में कागज पर उतारा जा सकता है। गुरसिख का मार्ग नमक से भरपूर सिल को चाटने जैसा है, किन्तु इसका स्वाद लाखों गन्नों के मीठे रस से भी अधिक मीठा है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की समूची बाणी सिखी का मार्ग बताने वाली है और एक गुरसिख के जीवन को नियमित करने वाली है। एक सच्चा गुरसिख सदैव श्री गुरु ग्रंथ साहिब के समक्ष नत्मस्तक होकर प्रतिदिन हुक्म लेकर अपनी दिनचर्या आरंभ करता है। सिख धर्म-दर्शन, क्योंकि विश्व का सबसे आधुनिक और व्यवहारिक धर्म-दर्शन है, इसलिये इसमें विचार के समान आचरण पर भी बल दिया गया है। एक सच्चे सिख की पहचान उसके आचरण से ही हो सकती है।

गुरसिख के आचरण के महत्व की पहचान करते हुए ही एक ऐसी आचार संहिता तैयार करने का विचार किया गया जो सारे सिखों पर लागू की जा सके और सिख धर्म की मर्यादा को अक्षुण रखा जा सके। इसी मंशा को आगे रख कर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने विभिन्न क्षेत्रों के सिख विद्वानों द्वारा प्रस्तावित एक आचार संहिता को स्वीकृति प्रदान की जिसे "सिख रहित मर्यादा" का नाम दिया गया।

सिख रहित मर्यादा को दो भागों में विभाजित किया गया है। पहला भाग व्यक्तिगत आचरण से सम्बंधित है, जिसमें बताया गया है कि एक सिख वैयक्तिक रूप से क्या करे और क्या न करे। दूसरे भाग को संस्थागत अथवा सामुदायिक आचरण से जोड़ा गया है और बताया गया है कि एक सिख, कौम के सदस्य के रूप में कैसा व्यवहार करे।

आज यह सवाल बराबर उठ रहे हैं कि सिख कौम, गुरु साहिबान के बताये मार्ग से विचलित हो रही है। समाज में विद्यमान जिन

**E-१७१६, राजाजीपुरम, लखनऊ-२२६०१७, मो. ९४१५९६०५३३*

कुरीतियों, पाखंडों, आडंबरों के विरोध में खड़े होकर श्री गुरु नानक देव जी ने जन-जन की चेतना को झिझोड़ने का काम किया था और ज्ञान का प्रकाश चारों ओर फैलाया था, सिख आज उसी प्रकाश से दूर होते जा रहे हैं। आज आवश्यकता है यह याद दिलाने की कि सिख होने का अर्थ क्या है।

"सिख रहित मर्यादा" में सबसे पहले नाम-बाणी के अभ्यास पर जोर दिया गया है। एक सिख को एक पहर रात रहते उठ कर स्नान करके परमात्मा का स्मरण करते हुए "वाहिगुरु" के नाम का जाप करना चाहिये। 'प्रातः काल' को गुरबाणी में 'अमृत वेला' का नाम दिया गया है। अमृत वेला उठकर नाम जपने से मन की सारी इच्छाएं पूरी होती हैं :

प्रातहकालि हरि नामु उचारी ॥
ईत ऊत की ओट सवारी ॥१॥
सदा सदा जपीऐ हरि नाम ॥
पूरन होवहि मन के काम ॥१॥रहाउ॥
(पन्ना ७४३)

अमृत वेला उठकर परमात्मा का सिमरन करने से इस लोक और परलोक दोनों में सहारा मिल जाता है और जीवन सफल होता है। मन सदैव परमात्मा में लीन रहे। परमात्मा का नाम ही सबसे बड़ा आधार है। जब परमात्मा के नाम का जाप अमृत वेला में किया जाये तो उसका महत्व ही अलग है :

हरि धनु रतनु जवेहरु माणकु हरि धनै नालि अंम्रित वेलै वतै हरि भगती हरि लिव लाई ॥
हरि धनु अंम्रित वेलै वतै का बीजिआ भगत खाइ खरचि रहे निखुटै नाही ॥ (पन्ना ७३४)

परमात्मा का नाम रत्न, जवाहर, माणिक आदि से भी अनमोल है और सच्चा सिख इस अनमोल धन से ही प्रीति लगाता है। प्रातः काल के शुभ समय में बोया गया परमात्मा के नाम का यह धन इतना फलता-फूलता है कि इससे स्वयं का उद्धार तो होता ही है अन्य लोगों का भी कल्याण हो जाता है, फिर भी यह पूंजी कम नहीं होती। जीना उसका ही सार्थक है जो परमात्मा का नाम जपता है :

हरि हरि नामु जपत नर जीवे ॥
मरि खुआरु साकत नर थीवे ॥ (पन्ना ८०६)

जो हरि के नाम का जाप नहीं करता वह मृतक के समान है और उसका जीवन व्यर्थ जाता है। हर किसी को अपने मन को टटोलना चाहिये कि वह कैसा गुरसिख है और वाहिगुरु के नाम का कैसा और कितना धन बो रहा है। कितने लोग पहर रात रहते उठ रहे हैं? क्या हमारी जीवन शैली ऐसी है कि हम रात को शीघ्र सोकर पहर रात रहते उठ सकें और स्नान करने के बाद नाम का जाप कर सकें? रात देर से सोना और सुबह देर से जागना कितने तनावों को जन्म देता है! मन और तन पर कैसे प्रभाव छोड़ता है? इनसे निपटने के लिये क्या-क्या करना पड़ता है? क्या इससे उत्तम नहीं कि रहित मर्यादा में रह कर पहर रात रहते उठकर नाम जपने के साथ दिन की आनंदपूर्ण शुरुआत करें?

नाम जपने के बाद दूसरी रहित है- नितनेम का पाठ करना। नितनेम में निम्नलिखित बाणियां शामिल की गयी हैं जिनका पाठ रोज करना है।

अमृत वेले में पढ़ने वाली बाणियां :
१) जपु जी साहिब, २) जापु साहिब, ३) दस सवय्यै जो 'स्रावग सुध' से आरंभ होते हैं।

सायंकाल की बाणी :
४) सो दरु रहरासि

रात को सोते समय पढ़ने वाली बाणी :
५) सोहिला

जपु जी साहिब

श्री गुरु ग्रंथ साहिब का आरंभ इस बाणी से होता है। इसमें परमात्मा के नाम के 'जप'

का महत्व बताया है। नाम जपना परमात्मा से सम्बंध स्थापित करने जैसा है। यह परमात्मा को पाने का मार्ग है। इस बाणी में यह बताया गया है कि परमात्मा को पाने के भिन्न-भिन्न उपाय किये जा रहे हैं किन्तु सिमरन ही एक मात्र ऐसा माध्यम है जिससे वह सहज ही प्राप्त हो जाता है। इसके लिये परमात्मा के हुक्म में रहना आना चाहिये, उसकी रजा में सुख का अनुभव करना चाहिये और सच के मार्ग पर ज्ञान, धैर्य, संयम और प्रेम से जीवन को समृद्ध करना चाहिये।

जापु साहिब

यह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा रचित बाणी है, जिसमें परमात्मा की स्तुति की गयी है। परमात्मा को हर रूप, हर स्थिति में विद्यमान देखा गया है। इसकी शैली और शबद-संयोजन मन में स्फूर्ति भरने वाला और एकाग्रता विकसित करने वाला है। जापु साहिब भी अद्वितीय रचना है जिसमें विभिन्न भाषाओं के शबद शामिल किये गये हैं। इनकी लयबद्धता विस्मय पैदा कर देने वाली है और मन को शांति प्रदान करने वाली है। जपु जी साहिब के पाठ के बाद जापु साहिब का पाठ करना एक वैचारिक क्रमबद्धता प्रदान करता है। 'जप' का महत्व धारण करके ही परमात्मा की सच्ची स्तुति हो सकती है।

दस सवय्ये

नितनेम की बाणियों में शामिल किये गये ये सवय्ये भी श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की बाणी है, जिनमें मनुष्य को जीवन की कठोर सच्चाइयों से अवगत कराया गया है। कोई कितना भी बलशाली हो, साधक हो, साम्राज्य का स्वामी हो, कैसे भी ज्ञान अर्जित किया हो, संयमी हो, तीर्थ-स्नान किये हों, परमात्मा की कृपा के बिना कुछ भी नहीं है। लोग भिन्न-भिन्न कलाओं, उपायों में पड़ कर परमात्मा को पाने की कोशिश में लगे हैं, किन्तु सब व्यर्थ है। परमात्मा प्रेम से ही मिलता है। इस बाणी में ढोंग-आडम्बरों पर चोट भी की गयी है और मनुष्य को उनसे सुचेत रहने का संदेश भी दिया गया है।

सो दरु रहरासि

सायं काल पढ़ी जाने वाली इस बाणी में मनुष्य परमात्मा से सीधा संवाद स्थापित करता है। इसमें परमात्मा की महिमा का वर्णन किया गया है, उसके साथ जुड़े रहने की विनती भी की गयी है, अपनी दीन-हीनता को सामने रखते हुए परमात्मा की कृपा की याचना भी की गयी है। इसमें मनुष्य को अपने विचारों की परिपक्वता और जीवन के लक्ष्य के दर्शन भी होते हैं और परमात्मा की कृपा के लिये वह उसका आभार भी व्यक्त करता है।

सोहिला

सोने से पूर्व सोहिला का पाठ मन को घनी शांति प्रदान करने वाला होता है। इसके पाठ द्वारा मनुष्य दिन भर की परमात्मा की कृपा के लिये उसका आभार व्यक्त करता है, उसकी वन्दना करता है और विनम्रता के साथ उससे जुड़े रहने की विनती करता है।

नितनेम की ये पांचों बाणियां एक गुरसिख के जीवन को प्रकाशित करने के लिये और सही दिशा प्रदान करने के लिये अत्यंत आवश्यक हैं। जाप करना और नितनेम करना गुरसिख का पहला लक्षण है। मनुष्य कितना भी व्यस्त क्यों न हो, 'जप' और नितनेम के लिये समय न निकाल पाये, इसका कोई कारण नज़र ही आता। इससे अधिक आवश्यक और कौन-सा काम हो सकता है जो एक गुरसिख को नितनेम करने से रोक सके?

कविताएं

दशमेश पिता

*–डॉ. रीटा रावत**

दशमेश पिता! आप की बात न्यारी है।
सारी सिख कौम पर कृपा तुम्हारी है।
बचपन से ही त्याग आरंभ लिया।
सरोवर में कंगन फैंक
रानी मैणी को प्रसन्न किया।
नौ वर्ष में पिता गुरु तेग बहादर जी को
बलिदान के लिए प्रेरित किया।
और नपीड़े जा रहे पीड़ितों का धर्म सुरक्षित किया।
दशमेश पिता! आप की बात न्यारी है।
सारी सिख कौम पर कृपा तुम्हारी है।
अमृत की दात बख्श,
सिख पंथ को नया जीवन दिया।
गीदड़ों को शेर बना दिया।
चिड़ियों से बाज लड़ा दिये।
दस लाख की फौज का टाकरा;
चालीस सिंघों से करवा दिया।
गुरु गोबिंद सिंघ जी!
आपकी बात न्यारी है।
सारी सिख कौम पर कृपा तुम्हारी है।
अनंदपुर को छोड़,
जंगलों में डेरा लगा लिया।
त्याग की कहां तक बात करुं,
सारा खजाना ही सरसा में बहा दिया!
दो बेटों को चमकौर और दो को,
सरहिंद में बलिदान करवा लिया।
त्याग की कौन-कौन सी गाथाएं बयान करुं,
सारा जीवन ही सिख कौम के लेखे लगा दिया!

केश

सिख होकर केश कत्ल करवाते हो।
फिर अपने को किसका पुत्र कहलवाते हो?
तुम को पिता दशमेश ने सरदारी बख्शी है।
तुम पर अपार कृपा की है।
केशों की परम्परा बड़ी पुरानी है।
हर अवतारी पुरुष की यह निशानी है।
सिख होकर केश कत्ल करवाते हो?
फिर अपने को किसका पुत्र कहलवाते हो?

बालों को बार-बार कत्ल भेड़ करवाती है।
इसलिए तो पशु श्रेणी में आती है।
मानव श्रेणी में आने के लिए, देवते भी तरसते हैं।
मनुष्य होकर कैसे ढंग अपनाते हो?
सिख होकर केश कत्ल करवाते हो?
फिर अपने को किसका पुत्र कहलवाते हो?

पिता के बिना पुत्र अनाथ कहलाता है।
और सारी जिंदगी ठोकरें ही खाता है।
केशों को रख सनाथ हो जाओ।
अपने को दशम पिता के पुत्र कहलवाओ।

**लेक्चरार हिन्दी, जे. एस. जे. डिगरी कॉलेज, गुरने कलां (संगरूर)-१४८०३१*

प्रकृति के साथ पारिवारिक सम्बंध बनाएं

*-डॉ. श्याम सुंदर दीप्ति**

कई बार ऐसा लगता है कि मनुष्य बहुत बुद्धिमान है। उसने बड़ी निष्ठा व एकाग्रता से समझ कर, विश्लेषण करते हुए, प्रकृति के रहस्यों को जाना है और प्रकृति से प्राप्त इस समझ को अपना कर, अपनी जिंदगी को सुखद बनाया है।

परंतु कई बार ऐसा अनुभव होता है कि मनुष्य के पास सभी जीवों से बड़ा मस्तक होते हुए, सब से अधिक प्रतिभा व समर्थ्य होने के बावजूद, वह प्रकृति के विरुद्ध जा रहा है।

आश्चर्य होता है इस बात पर कि जब एक समझदार व्यक्ति, जिसने इस ग्रह पर जीवन का रहस्य और जीवन के विकास को अच्छी तरह लोगों के सन्मुख प्रस्तुत किया है, आज वही इंसान ऐसे कार्य में लगा हुआ है कि इस धरती पर जीवन का अस्तित्व समाप्त होते प्रतीत होता है।

सभी जानते हैं कि इस पृथ्वी का पानी और हवा इस धरती पर जीवन के लिए कितने आवश्यक हैं। सिर्फ पानी और हवा का आस्तित्व ही काफी नहीं, हमें यह भी मालूम है कि हवा में आक्सीजन और कार्बनडायक्साइड का सही अनुपात भी जरूरी है। इस बात को चाहे वैज्ञानिकों ने लैबाटरी की सहायता से तथ्यों के आधार पर लोगों में प्रस्तुत किया है, परन्तु फिर भी हर जीव, सिर्फ मनुष्य की बात नहीं, भाव सभी इस बात को अनुभव करते हैं कि जहां हवा प्रदूषित होती है, जैसे धुआं गंदगी के कारण अन्य गैसों का बढ़ना आदि, वहां सांस लेने में बहुत कठिनाई होती है। वहां घुटन सी महसूस होती है और वहां से जीव उस क्षेत्र की तरफ दौड़ने लगते हैं, जहां हवाओं का सही संतुलन हो।

दूसरी तरफ हम यह भी अच्छी तरह जानते हैं कि वृक्ष हवा को शुद्ध करते हैं, वृक्ष मनुष्य द्वारा छोड़ी गई कार्बनडायक्साइड को अपने अंदर ले जाते हैं और आकसीजन छोड़ते हैं। आकसीजन मनुष्य के लिए जीवन है और कार्बनडायक्साइड पेड़-पौधों के लिए जरूरी खाद्य-तत्व है। इस तरह इन दोनों गैसों का आदान-प्रदान और इनका सही अनुपात, सही अर्थों में जीवन का आपसी चक्कर है। इसलिए प्रकृति से हमें पहली बात—आपसी सहयोग सीखना चाहिए।

इस समझ पर उस समय प्रश्नचिन्ह लगता है, जब मनुष्य प्रकृति के ओर से लगाए गए वृक्ष, मनुष्य जीवन के लिए आक्सीजन के स्रोतों को व्यर्थ समझकर, उसे काट कर मकान, बंगले, फैक्टरियां लगा रहा है जो कि आक्सीजन का सेवन करने वाले हैं उौर कार्बनडायक्साइड को पैदा करने वाले। इस तरह मनुष्य अपनी इस क्रिया से अपने आपको ही क्षतिग्रस्त कर रहा है।

यही प्रश्न पानी के बारे में है। पानी के अस्तित्व से ही जीवन की उत्पति शुरू हुई है। इस बात का अनुमान हम अपनी प्यास से लगा सकते हैं। हवा की जरूरत हमें उतनी तीव्रता से इसलिए नहीं महसूस होती क्योंकि हवा हमारे

**९७-गुरु नानक ऐवीन्यू, मजीठा रोड, अमृतसर।*

आस-पास फैली हुई है, परन्तु पानी की तलाश तो मनुष्य को स्वयं करनी पड़ती है। पानी के लिए मनुष्य सदियों से भटका है। आज भी चाहे घर-बंगला, बड़ा दफ्तर जो कुछ भी है, घर में पानी की मोटर तथा अन्य स्रोत भी हैं, परन्तु पानी पीने के लिए आदमी को स्वयं उद्यम करना पड़ता है। मानवी सभ्यताओं का इतिहास पानी पर भी निर्भर है। इस तथ्य का दूसरा पहलू यह है कि आदमी ने चन्द्रमा, मंगल, शुक्र आदि ग्रहों पर छानबीन करके देख लिया है कि वहां जीवन नहीं है और इसका भी मुख्य कारण है कि वहां पानी नहीं है।

यह जिंदगी के दो मुख्य स्तंभ हैं, जिनका जिक्र बार-बार होता है कि यह प्रदूषित हो रहे हैं, इसके बिना आदमी की जिन्दगी कुछ ही घण्टे की रह जाएगी। अगर इससे भी आगे देखा जाए कि खाद्य-पदार्थों और मिट्टी के प्रदूषण की बात या वातावरण के तापमान की या प्रकृति के जीवों का आलोप होना, जो कि मनुष्य-जाति के मित्र-जीव हैं भी उतने ही महत्वपूर्ण पहलू हैं।

इस तरह अगर हम ध्यान से देखें तो हमें अनुभव होगा कि पृथ्वी पर सभी जीव, यहां तक कि वृक्ष भी, सभी एक दूसरे के सहायक हैं। अगर आदमी को केन्द्र में रख लिया जाए, तो भी हम समझ सकते हैं कि हवा की गैसों के चक्कर के बिना, मनुष्य वृक्ष, पौधों के रूप में जो भी खाता है, भाव अन्न, फल, सब्जी और उसके बाद शरीर में जितना भी जज्ब करता है और शेष बाहर निकाल देता है, उसकी खाद का इस्तेमाल होता है। अगर यह हम समझें कि जीव-जगत का आपसी सहयोग ही एक दूसरे को चला रहा है, तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। यह सारा जगत एक परिवार की तरह ही समझना चाहिए, जिसमें जैसे सभी बड़े, बच्चे, बूढ़े, आदमी-औरत, बीमार-स्वस्थ, अपनी योग्यता के अनुसार काम करते हैं, एक दूसरे के सहारे चलते हैं उसी तरह प्रकृति का कार्य गतिशील होता है।

प्रकृति को समझने के प्रयत्नों में जीव-विकास और जीव-उत्पत्ति के अनेकों तथ्य हमारे पास हैं। लाखों-करोड़ों वर्षों के निरंतर विकास का अंतिम छोर मनुष्य है। अमीबे से लेकर कीटाणुओं तक, कीड़े-मकौड़ों से रीढ़धारी प्राणियों तक, थनधारी प्राणियों से बंदर-चैंपनीज तक और फिर मनुष्य। अगर यही विकास कड़ी है तो मनुष्य भी इस कड़ी का ही हिस्सा है। वह इस प्रकृति से, इस जीव-जगत से अलग नहीं है। इस विकास-कड़ी के तहत हम इस परिणाम पर पहुंचते हैं कि प्रकृति एक परिवार है और सभी जीव व वृक्ष उसके सदस्य हैं।

प्रकृति को समझते-समझते उसके रहस्यों को जानते हुए ऐसा लगता है कि मनुष्य प्रकृति का दुश्मन हो गया है। अगर ग्लोबल वार्मिंग की बात होती है तो उसके प्रभाव से ग्लेशियरों के पिघलने, वर्षा का समय तबदील होने, फसलों का चक्कर बदलने आदि की बात होती है तो मनुष्य इस संदर्भ में अपनी बात कहता है कि उसने ए. सी. बना लिया है, उसके पास सुरक्षित घर बनाने की कला है, उसके पास खाद्य-पदार्थ संभाल कर रखने की सुविधा है तो ग्लोबल वार्मिंग उसका क्या कर सकती है! अगर पानी प्रदूषित हो जाएगा तो हजारों फुट नीचे जाकर, सबमर्सीबल पंप लगाने की तकनीक उसके पास है! आर. ओ. टैक्नालोजी से वह पानी को शुद्ध करना जानता हैं। कार्बनडायर्क्साइड बढ़ जाएगी तो वह भी पानी की बोतलों की तरह आक्सीजन के सिलंडर अपनी पीठ पर लगाकर घूम लेगा।

अगर प्रदूषित वातावरण के कारण उसके गुर्दे, जिगर आदि खराब हो जाएंगे तो उसे बदलने के साधन भी उसके पास हैं! भाव यह हुआ कि मनुष्य के पास प्रकृति से लड़ने के लिए हर एक हथियार है, प्राकृतिक समझ है, एक बहुत बड़ा दिमाग है। मनुष्य के पास लड़ने का संकल्प है, उसके पास आपसी सहयोग की भाषा की कमी है।

परन्तु मनुष्य शायद यह नजरअंदाज कर रहा है या उसकी सोच ही इतनी संकुचित है, जिसे वह देख नहीं पा रहा कि जब ओजोन की परत पतली हो, उसमें छेद हो जाएगा और सूर्य की हानिकारक किरणें पृथ्वी पर पड़ेंगी तो उन्हें नहीं पता चलेगा कि नीचे कौन-सा जीव है। मनुष्यों में भी उसकी किस्म कौन-सी है; भाव असमर्थ या समर्थ। जब सुनामी का प्रकोप होता है तो सब कुछ नष्ट हो जाता है। मौसमों की तबदीली से पैदा हो रहे नए जीवाणु और नयीं बीमारियां, उनका हमला किसी विशेष वर्ग के लिए नहीं होता।

यह ठीक है कि इनका ज्यादा प्रभाव, पहले गरीबों/दलितों व पिछड़े हुए साधनहीन लोगों पर ही पड़ता है, परन्तु वह दिन भी दूर नहीं जब इस वातावरण की मार के नीचे कोई भी सुरक्षित नहीं होगा। कोई भी मनुष्य कितनी भी सामर्थ्य क्यों न रखता हो, वह अपने साधनों से चाहे लोगों को जिस तरह चाहे बांट ले, पर प्रकृति को, हवा व दरियाओं को, ज्यादा देर तक बांट कर नहीं रख सकता। प्रकृति के इन संसाधनों की निरंतरता रहेगी और आज नहीं तो कल इसके प्रभाव भी समस्त जीव-जगत पर पड़ेंगे ही।

मनुष्य के पास संघर्ष का अंतहीन सिलसिला है। मनुष्य के पास प्राकृतिक अपादाओं के वैज्ञानिक पक्ष को समझने और उन्हें कम करने या उनसे जूझने व काबू पाने की गाथा है। आज वही मनुष्य किस तरह के ऐतिहासिक दौर से गुजर रहा है कि उसे इस पृथ्वी पर अपने सिवा कुछ भी नजर नहीं आता। उसे 'स्व' इतना प्यारा हो गया है कि उसे अपने माता-पिता, बच्चे तक पराये लगने लगे हैं। उसे आज इतना नजदीक व अपना-अपना लगता है कि वह न तो आने वाले कल के प्रति गंभीर है और न ही बीते हुए कल से कुछ जानने-सीखने को तैयार है।

एक बार फिर वही सब कुछ कहने की जरूरत है, एक समझ पैदा करने की जरूरत है कि इस पृथ्वी पर सिर्फ जीव ही नहीं, वृक्षों सहित सभी ही एक परिवार के सदस्य हैं। इस प्रकृति की हो रही दुर्गति या प्रकृति के प्रति बढ़ रही बेसमझी का एक ही हल है कि प्रकृति और मनुष्य आपस में एक परिवार के सदस्य लगें न कि विरोधी।

हम धन्यवादी हैं "स्काटिश सिख कौंसिल, स्काटलैंड (यू. के.)" के तथा इस संस्था के भारत के प्रतिनिधि स. तरनदीप सिंघ के, जिन्होंने दिन-रात एक करके देश के अलग-अलग राज्यों से ११०० ऐसे हिंदी-भाषी सिख परिवारों का चयन किया जो 'गुरमति ज्ञान' को पाने या पढ़ने से अवंचित थे। स. तरनदीप सिंघ ने इन ११०० सिख परिवारों को वर्ष भर के लिए 'गुरमति ज्ञान' का सदस्य बनाया तथा सारी राशि अपनी संस्था द्वारा जमा करवाई। 'गुरमति ज्ञान' कार्यालय इस संस्था की चढ़दी कला के लिए परमात्मा के चरणों में अरदास करती है।

नशीले पदार्थों की चपेट में फंसी युवा पीढ़ी

*-डॉ मनमोहन सिंघ**

प्राचीन समय में लोग मादक तत्व रखने वाले पदार्थों का प्रयोग चिकित्सा के लिए करते थे, परन्तु आज के समय में वे पदार्थ नशा बन कर सामान्य लोगों के लिए शौक तथा कमजोर लोगों का व्यसन बनते जा रहे हैं। आजकल नशा करने की आदत युवकों में विशेष रूप से बढ़ती जा रही है। यह समस्या शहरों तथा गांवों में तेजी से बढ़ रही है। पिछड़े वर्ग तथा उच्च वर्ग के लोगों में इसका प्रचलन अधिक है।

भारत में प्रयोग किए जाने वाले नशीले पदार्थों में अफीम, गांजा, भांग तथा चरस नशीले पदार्थों का प्रयोग जिस गति से बढ़ा है उसे देखते हुए ऐसा लगता है कि अध्यात्म का केन्द्र कहलाने वाला हमारा देश धीरे-धीरे नशीली चीजों के प्रयोग की गिरफ्त में आता जा रहा है।

नशीले पदार्थों में स्मैक, हेरोइन, पैथाडीन, मार्फीन, अफीम, चरस, गांजा, मैड्रक्स, कोकीन आदि का प्रचलन बढ़ गया है और ये बुजुर्ग एवं युवा पीढ़ी दोनों को अपने शिकंजे में ले रहे हैं। स्मैक का प्रचलन तो इतना बढ़ गया है कि विश्व के बड़े-बड़े देशों में इसका दुष्प्रभाव देखा जा सकता है। अपराध-जगत आज नशीले पदार्थों के अवैध व्यापार के जरिये करोड़ों रुपये कमा रहा है।

नशीले पदार्थों का सेवन शुरू में एक प्रयोग के रूप में किया जाता है। कुछ पेशेवर अपराधी कच्ची उम्र के व्यस्कों पर इसका प्रयोग उन्हें मुफ्त में नशीले पदार्थ देकर करते हैं। धीरे-धीरे युवक इन पदार्थों के अभयस्त हो जाते हैं। तब उनके लिए उन नशीले पदार्थों से छुटकारा पाना असम्भव हो जाता है। नशा न मिलने पर ये युवक अपने घरों से कई प्रकार की चीजें चुराकर तथा अन्य अपराध कार्यों से धन प्राप्त करके नशीले पदार्थों का सेवन करते हैं।

भारत के अनेक विश्वविद्यालयों के युवक-युवतियों में नशीले पदार्थों का सेवन एक फैशन बनता जा रहा है। मनोवैज्ञानिकों का मत है कि नशीले पदार्थों का सेवन करने वाले प्राय: ऐसे परिवारों से संबंधित होते हैं जहां माता-पिता अपनी मौज-मस्ती में और अपनी अलग दुनिया में खोए रहने के कारण अपने किशोर बच्चों की ओर आवश्यक ध्यान नहीं दे पाते। उनके बीच पनप रही आपसी कटुता और झगड़ों का भी बच्चों पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

उक्त प्रकार के वातावरण से निकलने के लिए किशोर प्रेम तथा सम्मान की तलाश अपने मित्रों में करते हैं। ऐसी स्थिति में यदि नशेबाज मित्रों की संगत हो जाए तो किशोरों में नशे की लत पड़ जाना स्वाभाविक है। इस लत से छोटी उम्र में स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव तो पड़ता ही है कई बार मृत्यु तक को गले लगाना पड़ता है।

विशेषज्ञों के अनुसार स्कूली एवं किशोर बच्चों द्वारा हेरोइन तथा कोकीन जैसे तेज नशीले पदार्थों का प्रयोग तेजी से हो रहा है। अपराध विज्ञान संस्थान के एक विशेषज्ञ के अनुसार, जिन स्कूलों में ये बच्चे शिक्षा ग्रहण करते हैं उनकी खतरनाक नकारात्मक भूमिका को भी नज़रअंदाज नहीं किया जा सकता। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के एक विशेषज्ञ के अनुसार भारत में कुछ वर्षों से

**८८९, फेज़ ९, मोहाली-१६००६२*

किशोरों में हेरोइन का सेवन आम बात हो गई है। हर शहर में हेरोइन का प्रयोग करने वाले किशोरों का एक गिरोह-सा बन गया है और वे एक-दूसरे से जुड़कर इस 'मृत्यु' को गले लगा रहे हैं।

आज का युवा छात्र आखिर नशीले पदार्थों का सेवन इतना अधिक क्यों कर रहा है? इसके प्रमुख कारण हैं—पाठ्यक्रमों की नीरसता, सवेदनशून्यता तथा रोज-रोज होने वाली हड़तालें, मशीनी अध्यापन शैली, स्कूलों-कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में शिक्षा पाने के बाद अकेलेपन का एहसास, सच्चाई और सपनों का टकराव आदि। भविष्य की अनिश्चितता, परिवार का हद से अधिक नियन्त्रण या बहुत अधिक स्वतन्त्रता तथा बुरी संगत आदि भी इसके कारण होते हैं। यदि ध्यान से देखा जाए तो हमें पता चलेगा कि पिछले कुछ वर्षों में जब से पश्चिम में हिप्पीवाद का उदय हुआ और भारत जैसे देश उसकी चपेट में आए, नशीले पदार्थों का प्रयोग बढ़ता ही चला गया। कुछ व्यवसायिक प्रवृत्ति के मनचले लोगों ने नशीले पदार्थों को इधर-उधर करने का काम भी आमदनी के जरिये के रूप में अपना लिया है। आर्थिक अपराधियों ने विभिन्न तरीके अपनाकर नई पीढ़ी में इनका प्रचलन बढ़ाने में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष योगदान दिया है।

भारत में सर्वप्रथम सन् १८९३ में नशीले पदार्थों के प्रयोग को रोकने के लिए रायल कमीशन की नियुक्ति की गई थी। १८९५ में सरकार द्वारा गठित दूसरे आयोग ने नशीले पदार्थों के प्रयोग को रोकने के तरीकों के संबंध में विचार किया। सन् १९५९ में भारत सरकार के आबकारी आयुक्त द्वारा नशीले पदार्थों के सेवन को रोकने के लिए राज्य सरकारों के प्रतिनिधियों का एक सम्मेलन आयोजित किया गया था। मादक पदार्थों के प्रयोग तथा व्यापार के नियंत्रण के लिए सरकार ने नारकोटिक्स इन्टेलिजेंस ब्यूरो नामक एक केन्द्रीय संगठन का भी गठन किया। यह संख्या हानिकारक नशीले पदार्थों का प्रयोग घटाने तथा उन पर प्रतिबंध लगाने का कार्य करती है। इस संस्था द्वारा कुछ समय पूर्व प्रस्तुत की गई रिपोर्ट के अनुसार स्मैक अब केवल बड़े घरों के बिगड़ैल बच्चों तक ही सीमित नहीं रही है, यह अब आम होती जा रही है। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि देश में प्रति वर्ष पन्द्रह हजार से भी अधिक नशेबाजों की संख्या बढ़ रही है।

यदि आने वाले समय में नशीले पदार्थों के बढ़ते सेवन को नहीं रोका गया तो हालत पूर्णत: बेकाबू हो सकती है। अत: इस संबंध में विशेषज्ञों द्वारा सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं जिन पर अमल किया जाना चाहिए :

- सरकार को नशीले पदार्थों की तस्करी करने वालों को सख्त से सख्त सजा देने की व्यवस्था करनी चाहिए तथा इनके आयात अथवा उत्पादन पर पूर्ण नियंत्रण रखना चाहिए।
- किशोरों को परिवार का मधुर वातावरण तथा अभिभावकों का स्नेह भरा व्यवहार निरंतर प्राप्त होना आवश्यक है। किशोरों में नशे की लत बहुत कुछ पारिवारिक स्थितियों पर निर्भर करती है। इसका सदा ध्यान रखा जाए।
- स्कूलों तथा कॉलेजों में युवकों की सृजनात्मक शक्ति के विकास को प्रोत्साहित किए जाने के नए-नए कार्यक्रम बनाए जाएं ताकि उन्हें अकेलेपन का एहसास न हो और उनका ध्यान सृजनात्मक गतिविधियों की ओर लग सके।
- नशाखोरी समाप्त करने के लिए जन चेतना अभियान भी आवश्यक है। अत: सरकार की ओर से नशा विरोधी संगठन व संस्थाएं कायम की जानी चाहिएं।
- नशे की बुरी लत को समाप्त करने हेतु समाज के जागरूक नागरिकों तथा स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा हर संभव प्रयास करना श्रेयस्कर होगा।

कविता

खालसाई रुत्बा

-स. अवतार सिंघ*

हुई बख्शिश अकाल की मौज ऊपर,
पंथ खालसा भी बनाये डाला।
मर्द अगंमड़ा-ए-हिन्दोस्तान बनकर,
हुकम जाबरां कोल सुनाये डाला।
देकर पाहुल दो धारे की शहंशाह ने,
सिंघ सूरमा शेर सजाये डाला।
सवा-लक्खी जुझारू एक सिंघ बन कर,
रण में केसरी झंडा फहराये डाला।
शीश रख हथेली पर सिंघ सूरे,
कलगियां वाले से शक्तियां पा रहे थे।
करके सजदा, चरणों पे टेक माथा,
योद्धे रणक्षेत्र को जा रहे थे।
देख खालसाई तेगों के मुंह तीखे,
ऊंचे पर्वत भी शीश झुका रहे थे।
सूबा दिल्ली में बैठा घबरा रहा था,
सिंघ सूरमे विजय आज़मा रहे थे।
धन्य गुरु गोबिंद सिंघ की शान बंधु,
जिनके दर्शन कर दिल दिलदार हो गये।
अमृत वेले स्नान और प्रभु-सिमरन,
करके सभी जन भवजल पार हो गये।
गले पहन कृपाण, कटार, खंडे,
चक्रधार सरदार जुझार हो गये।
९६करोड़ी गुरु खालसा फौज जगमग,
अनंदपुरी के सच्चे दरबार हो गये।
अजब कौतुक दिखाये गुरु खालसा ने,
फखर-ए-मार्शल कौम खिताब पाया।

दीन, दुखी, निमाणों का मान बन कर,
प्रभु-नाम का निर्मल आब पाया।
जो करते थे छल इज्जत-आबरू से,
शासन काल था जिनका नाकाब छाया।
तोड़ी लगे पैमानों की बाढ़ झूठी,
सिख राज्य का सच्चा पैगाम पाया।
धन्य गुरु गोबिंद सिंघ की दात अमृत,
जिसको पीते ही योद्धे जांबाज हो गये।
उनकी नज़र में शेर भी लगे बिल्ली,
तीरंदाज हो गये, तलवारबाज हो गये।
मन में जीत और फतह भी खालसा की,
अहले-लक्श को पाने आबाद हो गये।
सिंघ योद्धे इस पौधे को सींचने को,
सिखी जड़ों में फैलता आब हो गये।
यह अरदास मेरी दाता सुन लेना,
पंथ खालसा सदा एकजुट रखना।
नित्य नाम खुमारी और दया-दृष्टि,
पंथ खालसे पर निरंतर अटूट रखना।

**गांव व डाक: फतेहगढ़ सुकरचक्क, जिला अमृतसर।*

ममतामयी मां

*–स. सुरजीत सिंघ**

"मां रब दा रूप हुंदी, पालदी जफर जालदी, जागदी दिन रात (प्रो. पूरन सिंघ)" के अनुरूप ही ममतामयी मां स्वयं भूखी-प्यासी रह, अपना खून-तन जला, स्वयं दुख-कष्ट झेल पसीना बहाती रहती है, किन्तु अपनी संतान को अपने आंचल में इस प्रकार से ढक लेती है कि वहां तक तनिक भी मुसीबत अथवा आंच नहीं पहुंच पाती। मां को स्नेह, प्रेम, त्याग, ममता एवं अनेकानेक गुणों की धारणी कहा गया है। धरती को भी 'माता' कहा गया है—*"पवणु गुरू पाणी पिता माता धरति महतु ॥"* 'मां' शब्द आत्मा का वह करुणामयी प्रतिरूप है जो आत्मा से निकलता है और आत्मा ही उसे उच्चारित करती है।

स्त्री मां के रूप में जीवन भर अनंत कमाई अथवा तपस्या करती रहती है। कोई और उसका व्यक्तित्व ले ही नहीं सकता, क्योंकि संतान का जन्म और उसका पालन-पोषण मां का विशेषाधिकार ही है। मां को हालात तो क्या प्रकृति भी कई-कई रूपों में चुनौती देती रहती है, परन्तु मां तो अपराजेय ही है, उसके हौंसले के आगे सभी नतमस्तक हैं। मां को बच्चे का 'प्रथम गुरु' कहा गया है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में मानव के लिए 'माता' मति (शिक्षा) और पिता 'संतोष' *"मति माता संतोखु पिता सरि सहज समायउ ॥"* श्री गुरु नानक देव जी के अनुसार परिवार में मां का स्थान सर्वोच्चता लिए हुए उस कमल के फूल के समान है, जिसकी सुगंध से घर-परिवार, आंगन महक उठता है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने 'अमृत' में ममतामयी गुरु-माता से मीठे बतासे मिलवाकर मातृत्व जागृत किया और माता का अभिवादन कर कहा, *"भलो भयो तू चल कर आई, नीर माहि मधुराई पाई।"* अनुदान और वरदान रूप शक्ति आप से पाई है।

मां को समय-समय पर परखा जाता है और हर कसौटी पर वह सदैव खरी उतरती आई है। परिवार में मुसीबत चाहे कितनी ही कड़ी धूप बनकर क्यों न आए किन्तु मां के आंचल को भेद कर संतान तक पहुंच पाना बहुत मुश्किल है। मां प्रकृति का वह अनमोल हीरा है जिसकी कोख से मानवता जन्म लेती है और जिसके स्पर्श मात्र से ही बड़े से बड़े दुख-दर्द स्वतः ही ठीक होने लग जाते हैं। मां के दो हाथ, दो आंखें ही सबको दृष्टव्य हैं, पर अदृश्य रूप में तो उसके कई हाथ, उसकी कई आंखें कार्यरत होती हैं, जो कि संतान के जीवन सजाने-संवारने के कार्य में निर्बाध सहायक हों। दूर बैठी अपनी संतान को मां देख-सुन सकती है। मां सारे परिवार का भोजन खुशी-खुशी बना देती है और सभी को खिलाकर बाद में स्वयं खाती है। मां अपने बच्चों को दुलार-प्यार से बड़ी से बड़ी चिंता से उबार लेती है। मां कमल के फूल की भांति कोमल है। वह ममतामयी है। उसके नेत्रों में बच्चों के लिए भावपूर्ण करुणामयी जल है, किन्तु बच्चों को नुकसान पहुंचाने वालों के लिए वह ज्वलंत

(शेष पृष्ठ ४६ पर)

**५७-बी, न्यू कॉलोनी, गुमानपुरा, कोटा (राज.)*

विश्व-शांति कैसे हो सकती है?

*-श्री सुरेन्द्र कुमार अग्रवाल**

भक्त कबीर जी ने अपनी पावन बाणी में धर्म की आड़ में पनप रहे पाखंड का विरोध किया है। पाखंड आज भी चरम सीमा पर है। तथाकथित धर्म-गुरु श्रद्धा, विश्वास का दोहन कर अपनी रोजी-रोटी सेक रहे हैं। मीडिया भी इसमें सहयोग कर रहा है। धर्म के नाम पर आज कई प्रकार के समागमों का आयोजन होता है जिनके पीछे वास्तव में धार्मिक भावना का अबाव होतो है। उनमें जनता को बहुत कम लाभ होता है बल्कि कई बार तो परेशानी भी होती है, इसको देखकर भक्त कबीर जी जैसे निर्भीक भक्त साहिबान की बाणी का याद आना स्वाभाविक है।

भक्त कबीर जी ने सबमें एक ही आत्मा का निवास देखकर सबसे मैत्री भाव रखने का उपदेश दिया। आज जाति, धर्म और स्वार्थ के चलते हिंसा और मारकाट को बढ़ावा मिल रहा है।

आज कई तथाकथित धनी देश गरीब देशों पर कई अपमानजनक शर्तें लगाकर उनका शोषण कर रहे हैं, उनके स्वतंत्र विकास एवं वैज्ञानिक प्रगति के मार्ग में बाधा खड़ी कर रहे हैं। ऐसे में भक्त कबीर जी के उपदेश और भी प्रासंगिक हैं। स्वयं पेट भर रोटी खाकर किसी को व्रत करने का उपदेश नहीं दिया जा सकता। इसका अर्थ यह नहीं कि व्रत रखना उचित है। यह मात्र उदाहरण के तौर पर लिया गया है।

जिसे जिस चीज की आवश्यकता होती है वह उसकी प्राप्ति के लिये प्रयास करता है, चाहे वैज्ञानिक प्रगति हो या भौतिक संसाधन-विस्तार। कोई देश विकसित और विकासशील बनकर अविकसित देशों को आगे न बढ़ने दे, यह उचित नहीं है। दूसरों के विकास और प्रगति को रोकने की भावना ठीक नहीं है। अगर हम दूसरों की प्रगति में बाधा खड़ी करेंगे और मंच से न्याय, नीति, शांति तथा सद्भाव की अपील करेंगे तो लोग उसे देखकर हंसेंगे, अत: हमें अपनी कथनी और करनी में समानता लानी चाहिए।

बड़ी मछलियां छोटी मछलियों को लीलने का सदा से प्रयास करती आ रही हैं। इसी से विश्व में हिंसा, तोड़फोड़ व तनाव बढ़ रहा है। सुख, शांति, सद्भाव कम ही देखने को मिलता है। भक्त कबीर जी कहते हैं कि किसी को ठगने का प्रयास मत करो। जो दूसरों को ठगने में लगे हैं वे ही विश्व में अशांति, अभाव और तनाव के लिये जिम्मेवार हैं। अत: सभी लोग व देश अपने-अपने स्वार्थों को छोड़कर विश्व-शांति के लिये कार्य करें और शांति के मार्ग में जो बाधाएं हैं उन्हें दूर करें।

जातिवाद, रंग-भेद, ऊंच-नीच, सांप्रदायिकता एवं वर्ग-भेद के कारण पूरा देश व विश्व आज खंड-खंड में बंटा हुआ दिखायी देता है। दलगत स्वार्थ, क्षेत्रगत स्वार्थ, धर्मगत स्वार्थ आज मानवता पर भारी पड़ रहे हैं और मानवता कुचली जा रही है। बड़े-बड़े पदों पर बैठने वाले जब किसी सिद्धांत व आदर्शों को नहीं मानते, स्व:-हित में

*अग्रवाल न्यूज एजेन्सी, हटा, दमोह (म. प्र.)-४७०७७५

जनहित की अनदेखी करते हैं, उन्हीं से ज्यादा देश का अहित होता है। हम सभी को अपने-अपने स्वार्थ छोड़ने होंगे, तभी विश्व में शांति होगी।

हमारे हथियार बिकते रहें, अत: एक देश को चंद सहायता देकर तनाव को जन्म न दें। जब एक देश में हथियार आते हैं तो पड़ोसी भी अपने विकास में व्यय होने वाली धनराशि में कटौती करके हथियार खरीदता है। यही कुछ विश्व में हो रहा है और तनाव बढ़ रहा है तथा आतंकवाद को बढ़ावा मिल रहा है।

हम एक देश को तबाह करके सुख से जी नहीं सकते। उस देश में जो बचेंगे वे भी समर्थ बनकर बदला लेने का प्रयास करेंगे। अगर हम दुनिया में सुख-शांति व सद्भाव चाहते हैं तो विश्व से गरीबी, अभाव, अन्याय, अनीति, असमानता को दूर करने का प्रयास करें। सबको एक समान समझकर मानवीय व्यवहार करें, सम्पन्न होकर उद्दंड और हमलावर न बनें, उदार, सहिष्णु और सेवाभावी बनें। पेड़ में फल लगते हैं तो डालियां झुक जाती हैं। सम्पन्न देश भी झुकना सीखें। पूरे विश्व को अपना मानकर उसके दुख-दर्द में सहभागी बनें, तभी विश्व-शांति सम्भव है।

धर्मंधता, कट्टरता, मनमानी करने वाले को कोई भी समर्थन न दें। अपने स्वार्थ के लिये जो निर्धन युवकों को लालच देकर और धर्म के नाम पर गुमराह करते हुए उनको प्रशिक्षण देते हैं, वे रक्षक पर भी हमला कर सकते हैं। निष्कर्ष यही निकलता है कि अन्याय, अनीति और आतंक को किसी भी स्थिति में समर्थन न दिया जाये, तभी विश्व-शांति संभव है।

कविता

भारत के सच्चे सपूतों को . . .

भारत के उन बलिदानी महातपस्वी वीरों को,
सरदारों को बारंबार नमन है मेरा।
जिन्होंने जननी जन्म-भूमि के
कोने-कोने को, खून-पसीने से सींचा हो।
अवसाद न जिनमें रंचमात्र हो
और अहर्यनिशि
सर्वस्व न्योछावर किया हो।
देश-हित में, मानवता के हित में,
मां, भाई, भगनी की ममता
प्रेयसी के मृदुलप्रण्य
धन, सम्पत्ति, ऐश्वर्य
सब त्याग दिया हो।
वे स्वतंत्रता के दीवाने
खून की होली खेल चुके हों,
कठिन काल में सफल हुए जो
स्वतंत्रता का लक्ष्य बेधकर।
और आज भारत के सरदार
स्वतंत्रता की अखण्डता के
परम उपासक चतुर चितेरा,
भुक्तभोगी, कर्मयोगी सिख शिरोमणि
देश की रक्षा करने को बेताब हो रहे।
स्वतंत्रता देश की
नवनिर्माण उत्थान देश का
लक्ष्य हो जिनका
अन्वेषक हों नव विकास के
ऐसे युग-निर्माता, सच्चे सपूतों,
कर्मठ मनीषियों को, अवसर दो सेवा करने का।

-श्री प्रेमचंद्र विद्यार्थी, भूमिगत स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, दमोह (म. प्र.)

गुरबाणी चिंतनधारा-३२

जापु साहिब की विचार व्याख्या

*-डॉ. मनजीत कौर**

नमो राजसं तामसं सांत रूपे ॥
नमो परम तत्तं अतत्तं सरूपे ॥
नमो जोग जोगे नमो गिआन गिआने ॥
नमो मंत्र मंत्रे नमो धिआन धिआने ॥१८६॥

हे अकाल पुरख! तुझे नमस्कार है। माया के तीनों ही गुण तेरे द्वारा निर्मित हैं। पर तू सृष्टि-रचना के इन तीनों गुणों से परे है अर्थात् तू परम आत्मा है। तेरा स्वरूप जगत-रचना के तीनों ही गुणों से निर्मित नहीं है। माया के तीन गुण इस प्रकार माने गए हैं—*'राजस'*, माया का वह गुण जिसकी प्रेरणा से संसार के सभी व्यक्ति अपने-अपने कार्यों में लगे हैं। इसे मनीषिओं ने मानव जीवन का प्रमुख गुण माना है। *'तामस'* अर्थात् मन का अंधकार, नाम से ही स्पष्ट है अज्ञानता। अत: यह गुण जीव को रसातल की ओर धकेलता है। जहां इंसान को अपने स्वार्थ के आगे कुछ भी दिखाई नहीं देता, जहां इंसानियत का जज्बा खत्म हो जाता है। *'सांत'*, यह माया का तीसरा गुण है, यह तीनों में श्रेष्ठ है। इसका अर्थ है परहित (दूसरों की भलाई) में जीवन लगाना अर्थात् हृदय की निर्मलता तथा पवित्रता। वह ईश्वर माया के तीनों रूपों से दूर है।

तुझे नमस्कार है। सबसे कठिन तपस्या, सबसे बड़ा ज्ञान तू ही है। तू ही महामंत्र है तथा तू ही सबसे कठिन समाधि है। अत: हे प्रभु! तेरा पावन नाम ही हमारे लिए जप, तप, मंत्र, तंत्र, कठिन योग, समाधि आदि सब कुछ है। पंचम पातशाह ने भी प्रभु-प्राप्ति के समस्त साधनों में से प्रभु-सुमिरन को सिरमौर माना है, यथा :

प्रभ का सिमरनु सभ ते ऊचा ॥
प्रभ कै सिमरनि उधरे मूचा ॥ (पन्ना २६३)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रमुख उपदेश 'नाम' है। गुरु-कृपा से नाम की प्राप्ति होती है और इसी की बरकतों से उस परमेश्वर के चरणों की सांझ बनती है। अत: गुरबाणी आशयानुसार 'नाम' ही सबसे श्रेष्ठ है, यथा :

नाम तुलि कछु अवरु न होइ ॥
नानक गुरमुखि नामु पावै जनु कोइ ॥
(पन्ना २६५)

नाम तथा परमेश्वर अभेद हैं। नाम जपने वाला नर्कों में नहीं डाला जाता यथा :

नाउ तेरा निरंकारु है नाइ लइऐ नरकि न जाईऐ ॥ (पन्ना ४६५)

अत: उस परमेश्वर के चरणों में हर वक्त जीव की यही अरदास विनती होनी चाहिए :

सतिगुरु सिख को नामु धन दे ॥ (पन्ना)

नमो जुध जुधे नमो गिआन गिआने ॥
नमो भोज भोजे नमो पान पाने ॥
नमो कलह करता नमो सांत रूपे ॥
नमो इंद्र इंद्रे अनादं बिभूते ॥१८७॥

हे वाहिगुरु! तू युद्धों में श्रेष्ठ युद्ध अर्थात धर्म-युद्ध है, तुझे नमस्कार है। ज्ञान में सर्वोत्तम ज्ञान अर्थात् ब्रह्मज्ञान, तुझे नमस्कार है। हे भोजनों में सर्वोत्तम भोजन अर्थात् आध्यात्मिक

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर (राजस्थान)-३०२००४ मो: ०१४१-२६५०३७०*

खुराक, पीने योग्य पदार्थों में सबसे उत्तम पेय पदार्थ अर्थात् अमृत रस, तुझे नमस्कार है।

अद्वैत रूप में तू जगत के समस्त झगड़ों का कारण तू ही है। द्वैत रूप में उन समस्त झगड़ों को शांत करने वाला भी तू ही है। अत: सभी विवादों को निपटा कर पुन: शांति स्थापित करने वाला भी तू ही है। तुझे नमस्कार है। इंद्रों के इंद्र, राजाओं के राजा प्रभु, तुझे नमस्कार है। हे आदि रहित (अनादि) स्वरूप पारब्रह्म अनंत सम्पदा के मालिक प्रभु, तुझे नमस्कार है।

प्रस्तुत बंद में कलगीधर पिता उस बादशाहों के बादशाह प्रभु के समस्त रूपों, नामों पर कुर्बान जाते हैं, जैसा कि गुरबाणी में अन्यत्र भी यही भाव स्पष्ट होता है, यथा :

बलिहारी जाउ जेते तेरे नाव है ॥ (पन्ना ११६८)

कलंकार रूपे अलंकार अलंके ॥
नमो आस आसे नमो बांक बंके ॥
अभंगी सरूपे अनंगी अनामे ॥
त्रिभंगी त्रिकाले अनंगी अकामे ॥१८८॥

हे वाहिगुरु! तेरा स्वरूप बेदाग है अर्थात् कलंक से रहित है। सुंदर व्यक्तियों को सुंदरता देने वाले प्रभु, तुझे नमस्कार है। समस्त जीवों की आशाएं पूर्ण करने वाला भी तू ही है। अत: तू ही सबकी आशा का आधार है। तू सबसे सुंदर है, तुझे नमस्कार है।

हे मालिक! तेरी हस्ती सदा सलामत है अर्थात् तेरा वजूद कभी भी नष्ट होने वाला नहीं है। तू अंग रहित है, तेरा कोई एक विशेष नाम नहीं है अर्थात् तू समस्त नामों से जाना जाता है। तू तीनों लोकों का विनाश करने वाला है। तू तीनों कालों (भूत काल, वर्तमान काल तथा भविष्य काल) में सदा कायम रहने वाला है। तेरा कोई अंग नहीं है। तू समस्त कामनाओं से रहित है अर्थात् कोई इच्छा तुझे मोह नहीं सकती।

एक अछरी छंद ॥

अजै ॥ अलै ॥ अभै ॥ अबै ॥१८९॥

हे प्रभु! तू अविजित है, अत: तुझे कोई हरा नहीं सकता। तू अविनाशी है अर्थात् तुझे कोई नाश नहीं कर सकता। तुझे किसी से भी डर नहीं है। तू भय से मुक्त है। तू मौत रहित है, अत: तुझे मृत्यु का भी भय नहीं है।

वस्तुत: उस अभय प्रभु का भय-अदब जिस मनुष्य के हृदय में बसा रहता है उसे भी दुनिया का कोई भय नहीं सता सकता। ऐसा प्राणी उस सर्वशक्तिशाली प्रभु का सुमिरन करता हुआ समस्त चिंताओं से मुक्त हो जाता है।

अभू ॥ अजू ॥ अनास ॥ अकास ॥१९०॥

हे प्रभु! तू अजन्मा है अर्थात् आवागमन से सर्वथा मुक्त है। तू अचल है अर्थात् तेरे सिंहासन को कोई हिला नहीं सकता। तेरी हस्ती सदैव स्थिर है। तू नाश रहित है, तू आकाश की तरह सर्वत्र मौजूद है अर्थात् तू सर्वव्यापी है।

अगंज ॥ अभंज ॥ अलक्ख ॥ अभक्ख ॥१९१॥

हे प्रभु! तुझे कोई जीत नहीं सकता। तुझे कोई छिन्न-छिन्न नहीं कर सकता। तुझे कोई तोड़ नहीं सकता। तू अदृश्य है अर्थात् इन ज्ञान इंद्रियों की तेरे तक पहुंच नहीं है। वस्तुत: तू जीव की समझ से परे है। तू निराहारी है अर्थात् तेरी कोई खुराक नहीं है। 'अभक्ख' शब्द का अर्थ कुछ विद्वानों द्वारा (काल-ग्रसित) होने से मुक्त किया गया है अर्थात् काल तुझे अपना ग्रास नहीं बना सकता।

अकाल ॥ दिआल ॥ अलेख ॥ अभेख ॥१९२॥

हे प्रभु! तू काल रहित है। तू मौत से परे है। तू दया का घर है अर्थात् तू बड़ा दयालु है। तू कर्म-रेखाओं से रहित है। तेरा कोई

विशेष पहरावा नहीं है।

अनाम ॥ अकाम ॥ अगाह ॥ अढाह ॥१९३॥

हे वाहिगुरु! तू किसी विशेष नाम से रहित है अर्थात् तेरा कोई एक नाम नहीं है। तुझे कोई कामना नहीं है। तू अथाह है अर्थात् तेरा पार नहीं पाया जा सकता। तुझे कोई गिरा नहीं सकता।

अनाथे ॥ प्रमाथे ॥ अजोनी ॥ अमोनी ॥१९४॥

हे प्रभु! तेरे ऊपर कोई स्वामी नहीं है अर्थात् तू पूर्णतया आवागमन से मुक्त है, क्योंकि जहां जन्म ही नहीं वहां मृत्यु का सवाल ही नहीं उठता। तू मौन धारण करके नहीं बैठा अर्थात् तू स्वयं सब जीवों से सब तरह के क्रिया-कलाप कर रहा है।

न रागे ॥ न रंगे ॥ न रूपे ॥ न रेखे ॥१९५॥

हे परमेश्वर! तुझे किसी से किसी तरह का मोह नहीं है अर्थात् तू मोह-बंधन से मुक्त है। तेरा न कोई विशेष रंग है, न रूप (आकृति) और न ही कोई विशेष चिन्ह है।

अकरमं ॥ अभरमं ॥ अगंजे ॥ अलेखे ॥१९६॥

हे प्रभु! तू समस्त कर्मों के बंधन से स्वतन्त्र है, न ही तुझे किसी किस्म का भ्रम-भुलेखा है तथा न ही तुझे किसी धार्मिक रस्मों (रीति-रिवाजों) की आवश्यकता है। तुझे कोई जीत नहीं सकता, क्योंकि तुझे कोई हराने वाला है ही नहीं और न ही तेरी कोई तस्वीर बनाई जा सकती है।

भुजंग प्रयात छंद ॥

नमसतुल प्रणामे समसतुल प्रणासे ॥
अगंजुल अनामे समसतुल निवासे ॥
न्रिकामं बिभूते समसतुल सरूपे ॥
कुकरमं प्रणासी सुधरमं बिभूते ॥१९७॥

उपरोक्त बंद में कलगीधर पातशाह उस नमस्कारयोग प्रभु को नमस्कार करते हैं कि हे वंदनीय प्रभु! तुझे नमन है। जो सब जीवों का नाश करने वाला है उसे नमस्कार है, जो नाश रहित है। सर्वत्र तथा समस्त जीवों में जिसका निवास है उसे नमस्कार है, उस वाहिगुरु को, जिसके प्रताप के समक्ष कोई कामना अपना प्रभाव नहीं डाल सकती। संसार के सभी प्राणी उसी निराकार का आकार हैं। नमस्कार है उस प्रभु को जो कुकर्मों अथवा बुरी ताकतों का विनाशकर्त्ता है। जिसके प्रताप के ये लक्षण हैं कि वह अपने समस्त कर्त्तव्यों (फर्जों) को भली-भांति निभा रहा है अर्थात् वह प्रभु अपने सभी कर्त्तव्यों को समग्रता से पूर्ण कर रहा है।

वस्तुत: वह ईश्वर समस्त बुराइयों का समूल नाश करने वाला है तथा संसार के सभी दायित्वों को बाखूबी निभा रहा है।

सदा सच्चिदानंद सत्त्रं प्रणासी ॥
करीमुल कुनिंदा समसतुल निवासी ॥
अजाइब बिभूते गजाइब गनीमे ॥
हरीअं करीअं करीमुल रहीमे ॥१९८॥

हे वाहिगुरु! तू सदैव सद-चित्त-आनंद-स्वरूप है। हे प्रभु! तुझे नमस्कार है, तू सदा सचमुच मौजूद है तथा आनंद देने वाला है। तू शत्रुओं का नाश करने वाला है, सब जीवों पर कृपा करने वाला है, सब जीवों को उत्पन्न करने वाला है तथा सब प्राणियों में तेरा ही निवास है।

हे ईश्वर! तू आलौकिक (दिव्य) सम्पदा वाला है। तेरा प्रताप आश्चर्यजनक है। तू शत्रुओं पर कहर बरसाने वाला है अर्थात् वैरियों के जीवन में कोहराम मचाने वाला है। तू स्वयं ही निर्माण करने वाला तथा स्वयं ही विनाश का कारण है अर्थात् समस्त उत्पत्ति तथा संहार तेरे अधीन है। तू कृपालु तथा दयालु है। वस्तुत: हे परवरदिगार! तू रहमतों का सागर है।

चत्त्र चक्क्र वरती चत्त्र चक्क्र भुगते ॥

सुयंभव सुभं सरबदा सरब जुगते ॥
दुकालं प्रणासी दिआलं सरूपे ॥
सदा अंग संगे अभंगं बिभूते ॥१९९॥

हे वाहिगुरु! तुझे नमस्कार है। तू तीनों लोकों (आकाश, पाताल तथा मातलोक) में मौजूद है अर्थात् समस्त दिशाओं में जर्रे-जर्रे में तू ही समाया हुआ है। हे प्रभु! सारे जगत में तेरा ही हुक्म चल रहा है। तू स्वयं से प्रकट हुआ है अर्थात् तू स्वयं से ही प्रकाशवान है, जो सुंदर स्वरूप है।

हे वाहिगुरु! 'दुकालं' (दोनों समय के) अर्थात् प्रभु दोनों समय के (जन्म-मृत्यु) के दुखों का नाश करने वाला है। तू दयालु स्वरूप है। तू सदैव सब जीवों के अंग-संग है अर्थात् तू हर वक्त प्रत्येक जीव के साथ है। तेरा प्रताप कदाचित नाश होने वाला नहीं है अर्थात् तू युगो-युग अटल एवं अविनाशी है।

गुरु कलगीधर पातशाह के पावन मुखारबिंद से उच्चारण की गई पावन बाणी 'जापु साहिब' में परमेश्वर के अनंत गुणों का ओजस्वी शैली, वीर रस में गुणगान किया गया है। पूर्ण श्रद्धा एवं एकाग्रता से इस बाणी का पाठ हृदय में आलौकिक शक्ति का संचार करता है। आत्मिक जीवन देने वाले नाम रूपी अमृत को जो पीता है उसका जीवन धन्य हो जाता है, जैसा कि गुरबाणी प्रमाण है :

अंम्रित बचन सतिगुर की बाणी
जो बोलै सो मुखि अंम्रितु पावै ॥ (पन्ना ४९४)

वस्तुतः सबसे बड़ा परोपकारी वह प्रभु स्वयं है जिसकी रहमत का सदका मानव जीवन मिला है। जो गुणहीनों को भी दातें बख्श रहा है उस सतिगुरु ने पावन बाणी से जोड़ कर समस्त वहमों-भ्रमों से मुक्त कर दिया है :

परउपकारी सरब सधारी सफल दरसन सहजइआ ॥
कहु नानक निरगुण कउ दाता चरण कमल उर धरिआ ॥ (पन्ना ५३३)

वृक्ष और हवा

-स. भगत पूरन सिंघ

एक दिन में चालीस सिगरेटों को पीने वाले मनुष्य को जो क्षति होती है उतनी ही क्षति साधारण मनुष्य को बड़े-बड़े नगरों में श्वास लेने से होती है। आज का मनुष्य वृक्षों का शत्रु बना हुआ है; जगह-जगह अपने उपयोग हेतु इनको काटता जा रहा है। यह बहुत नुकसानदेय सिद्ध हो रहा है। वैज्ञानिकों का कहना है कि एक सौ तीस लीटर पेट्रोल से उत्पन्न होने वाली दूषित हवा में फैले विषैले तत्वों को समाप्त करने की क्षमता एक वृक्ष में होती है। यदि वृक्ष ऐसा न करें तो पेट्रोल के सेवन से प्रदूषित वातावरण में मानव-स्वास्थ्य पर अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। इससे मनुष्यों में ब्लड-प्रेशर बढ़ रहा है और दिमागी खराबी भी उत्पन्न होने की संभावना हो रही है। कारखानों के द्वारा हवा में सल्फर-डाईऑक्साइड बढ़ रही है। वृक्ष कुछ सीमा तक इसको समाप्त कर सकते हैं, परंतु इसकी अत्यधिक मात्रा बढ़ने से वृक्षों पर भी बुरा प्रभाव पड़ने के कारण उनके पत्ते झड़ जाते हैं। मनुष्य कई प्रकार के उपकरणों तथा कारखानों के माध्यम से हवा के तापमान को बढ़ा रहा है।

स्रोतः पुस्तिका 'सफलिओ बिरखु हरीआवला'
अनुवादक : सुरिंदर सिंघ निमाणा।

गुरु-गाथा : १०

रानी मां

*-डॉ अमृत कौर**

राजा जय सिंह के द्वारा सिख जगत के निमन्त्रण पर श्री गुरु हरिक्रिशन जी दिल्ली पहुंचे। दिल्ली पहुंचने पर राजा जय सिंह ने गुरु जी की बड़ी आवभगत की और अपने विशेष बंगले में उन्हें ठहराया जहां पर अब गुरुद्वारा बंगला साहिब है जो उनके ज्योति जोति समाने पर उसने उनकी याद में समर्पित कर दिया। गुरु जी के दिल्ली आने पर कीर्तन और प्रवचनों की शृंखला शुरू हो गई, दिल्ली की श्रद्धालु संगतों की मनोकामना पूर्ण हुई। राजा जय सिंह जी महारानी की बड़ी तीव्र उत्कंठा थी कि गुरु जी उनके महलों में आएं और उन्हें 'मां' कह कर बुलाएं, परन्तु वह साथ ही गुरु जी की परीक्षा भी लेना चाहती थी कि गुरु जी वास्तव में पूर्ण-सक्षम सतिगुरु हैं या नहीं? और यदि हैं तो मेरे मन की बात जान कर मेरी मनोकामना पूर्ण करें।

महारानी नौकरानी की वेशभूषा धारण कर सुसज्जित अन्य रानियों के बीच में बैठ गई। राजे ने गुरु जी से कहा, "गुरु जी! कृपा करके पहचानो कि इन में महारानी कौन है?" गुरु मुस्करा पड़े और गोली के रूप में बैठी महारानी की गोद में जाकर बैठ गए, "रानी मां जी नमस्कार" महारानी की आंखों में से प्रसन्नता के आसूं बह निकले और उनके आश्चर्य की सीमा न रही और वह पूछ ही बैठी, "गुरु जी आपने कैसे पहचाना कि मैं ही महारानी हूं? मेरा मन आप के मुंह से 'मां' शब्द सुनने के लिए तड़प रहा था।"

गुरु जी हंस पड़े। चारों ओर प्रकाश फैल गया। प्यार की अजस वर्षा होने लगी। गुरु जी ने भावावेश में कहा, "रानी मां, प्रभु सवर्त्र नहीं हो सकता था अत: उसने मां का निर्माण किया। 'मां' शब्द कितना मीठा और प्यारा है! यह अन्र्तरात्मा से फूटता है। प्रत्येक नारी मां बनना चाहती है। मातृत्त्व उसे पूर्णता प्रदान करता है। प्यार से 'मां' शब्द सुनना प्रत्येक नारी की प्रबल उत्कंठा होती है। मां बन कर वह अपना सम्पूर्ण अस्तित्व बच्चों पर न्योछावर कर देती है। उसकी महान शक्तियों का विकास मां बन कर होता है। हमारे धर्म में मां को बहुत स्तुति प्राप्त है :

जितु मुखि सदा सालाहीऐ भागा रती चारि ॥
नानक ते मुख ऊजले तितु सचे दरबारि ॥

(पन्ना ४७३)

अर्थात् जो मुख शीलवान स्त्री की प्रशांसा करता है वह प्रभु के दरबार में उज्जवल होता है और रहा यह प्रश्न कि मैंने आप को कैसे पहचाना? लाल गुदड़ी में कहां छिपे रहते हैं! आपके चेहरे पर बरसता नूर आप के मुख मंडल पर अंकित प्रसन्नता, प्यार छिपाए नहीं छिप रहा था।"

रानी मां ने बाला प्रियतम को सतिगुरु के रूप में स्वीकार किया। उन्हें लगा कि उनकी प्यासी रुह युगों-युगांतरों से इस दैवी प्यार के लिए तरस रही थी। एक असीम आनंद और विस्माद में रानी के नेत्र मुंद गए। रानी सदा-सदा के लिए गुरु जी के श्रद्धालु बन गई।

**१५४, ट्रिब्यून कालोनी, बलटाना, जीरकपुर-१४०६०३*

दशमेश पिता के ५२ दरबारी कवि-२१

दशमेश-महिमा के गायक : कवि शारदा

*-डॉ. राजेंद्र सिंघ 'साहिल'**

दशमेश पिता साहिब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दरबारी कवियों की अब तक जो सूचियां उपलब्ध हुई हैं उनमें कहीं भी 'शारदा' नाम नहीं आया है, परन्तु 'गुर प्रताप सूरज ग्रंथ' में दो छंद ऐसे मिले हैं जिनमें कवि के नाम के स्थान पर 'शारदा' का उल्लेख मिलता है।

'कलगीधर चमत्कार' ग्रंथ के रचयिता भाई वीर सिंघ के अनुसार इन छंदों के उस अंश 'शारदा कहित है . . .' का अर्थ 'सरस्वती कहती है' भी लगाया जा सकता है। लेकिन काव्य-शास्त्रीय परंपरा के मुताबिक यहां कवि का नाम ही ऐसे दिया जाता है। अत: उचित यही प्रतीत होता है कि स्पष्ट मान लिया जाये कि ये छंद कवि शारदा के हैं जो दशमेश पिता के दरबारी कवि थे।

कवि शारदा के ये दोनों छंद कबित्त हैं। इनकी भाषा ब्रज है। दोनों छंदों की काव्य-कला-कुशलता से स्पष्ट महसूस होता है कि कवि शारदा एक बहुत ही उच्च कोटि के कवि थे। कवि शारदा ने अपने कबित्तों में बड़ी सधी एवं अलंकारिक भाषा का प्रयोग किया है। आपके दोनों कबित्तों का विषय दशमेश पातशाह की स्तुति एवं महिमा-गान है।

कवि शारदा का पहला कबित्त इस प्रकार है:

दिश दिश देश देश, ऐश दिगपाल केते,
आज करे काल केते गुनह गहति हैं।
प्रबल प्रतापी पातशाह साचे सुनीअति,
तेरे सिर भार भू को शारदा कहति हैं।
ओजन के सूर महां, मौजन सों घेर मार,
और न बिचार की जै दारिद दहित हैं।
हर मांगे बर देति मांग गुर गोबिंद को,
करतार मांगे करतार दे रहत हैं।

अर्थात् कवि शारदा कहते हैं—"दिशाओं के स्वामी दिक्पाल और कई देशों के राजा आज आपके गुण ग्रहण कर रहे हैं और कल भी ग्रहण करेंगे। आपके बारे में सुना जाता है कि आप प्रबल प्रतापी पातशाह हो और सारी धरती का भार यानी जिम्मेवारी आप पर है। आप उमंग और उत्साह के महान् सूरमा हो और बख्शिशों से घेर कर मार देते हो। मेरे मन! तू और विचार न कर . . .। वे इस तरह दरिद्रता को समाप्त करते हैं। यदि ईश्वर से कुछ मांगें तो वह वर देता है, परंतु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी से मांगें तो वे अपने हाथों से तार भी देते हैं और (प्रकारान्तर अर्थ से) करतार भी दे देते हैं।

दशमेश पिता की दानवीर एवं आध्यात्मिक कृपाओं का इस कबित्त में सुंदर वर्णन हुआ है। इसी प्रकार दूसरे छंद में गुरु जी की तुलना द्वापर युग के अवतारकृष्ण से एवं गुरु जी की छड़ी की तुलना भी श्री कृष्ण जी की बांसुरी से की गई है। दूसरा कबित्त इस प्रकार है :

कुंज कुंज गलिनि बजाई बन बांसरी जी
उनही के संग सोई शारदा कहति है।
जमना के तट बंसी बट के निकट सोई
तट सतुद्रव आन साहिबी करत है।
देखो भूप भूपनि के, भूम के भगत लोगो!
भाग या छरी के मो सों कहिबे बनत है।

**१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना)-१४११०१, मो. ९४१७२-७६२७१*

कान्ह हवै के औतर्यो तौ मुख ही रहत लागी,
गोबिंद हवै औरत्यो तो हाथ ही रहत है।

अर्थात् कवि शारदा कहता है कि वृंदावन के कुंज-कुंज, गली-गली में जो बांसुरी बजाई थी, वह अब भी उन्हीं अर्थात् गुरु गोबिंद सिंघ जी के पास (छड़ी रूप में) है। पहले ये जमना के तट पर बांसुरी बजाया करते थे और अब शतद्रु यानी सतलुज के किनारे पर साहिबी कर रहे हैं। हे सिंहासन पर विराजे गुरु जी और भूमि के भक्त-जनो! इस छड़ी के भाग्य के बारे में मुझे कहना ही पड़ा है कि जब ये कान्ह बन के अवतरे थे तो ये मुख से लगी रहती थी और अब जब श्री गुरु गोबिंद सिंघ बन के अवतरे हैं तो हाथ में (सुशोभित) रहती है।

इस प्रकार श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की महिमा में रचे गये ये दो कबित्त कवि शारदा को सदैव के लिए अमर कर गये।

ममतामयी मां

(पृष्ठ ३७ का शेष)

ज्वाला है।

भारतीय प्राचीन संस्कृति में नारी का सदैव गौरवपूर्ण स्थान रहा है। मां को जीवन-निर्मात्री कहकर सम्बोधित किया गया है। इंसान के जीवन में मां और मां का रिश्ता पवित्र, अति उत्तम एवं महत्वपूर्ण रहा है, क्योंकि जन्म से पूर्व ही मां और बच्चे के रिश्ते के तार आपस में जुड़े हुए रहते हैं। मां निरंतर नौ माह तक अपनी कोख में बच्चे को अपने रक्त से सिंचित करती रहती है। सांसारिक रिश्तों में शायद एक मात्र मां का ही ऐसा रिश्ता है जो निज स्वार्थ से प्रेरित नहीं है।

ममतामयी मां वात्सल्य और निश्चल सच्चे प्रेम की जीती-जागती मूरत है, जो कि नए जीवन की जन्म-दात्री, पालनहार है। मां को सर्वोच्च मार्गदर्शक, सर्वश्रेष्ठ एवं वन्दनीय कहा गया है, क्योंकि वही बच्चे का प्रथम शिक्षक होती है। मां ही बच्चे में संस्कार डाल सही एवं सीधा मार्ग प्रशस्त करती है। गुरबाणी में जननी की उपमा—*"सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान"* कहते हुए की गई। राजा-महाराजा शूरवीरों, ऋषियों-मुनियों की जन्मदात्री मां पूजनीय है। मां बत्तीस गुणों—सेवा, दया, संयम, उदारता, निष्कपटता, धैर्य, ममता, उद्यम इत्यादि की धारणी है।

मां जिन्दगी के सभी रिश्तों-संबंधों से परे सुहृदयी, ममतामयी, सच्ची सलाहकार एवं मार्गदर्शक शिक्षक है। ऐसा भी कहा गया है कि मां की आज्ञा का पालन करते हुए सेवा करते रहें, क्योंकि "जन्नत" मां के कदमों तले ही है। मां का तात्पर्य ममता-प्रेम से है। संतान ने उत्पत्ति के पूर्व जिस अद्वैत का अनुभव किया वह मातृत्व का अविस्मरणीय क्षण ही है। अद्वैत जब द्वैत बनता है तब दो हो जाते हैं—एक मां और दूसरा संतान। ईश्वर के स्नेह की तुलना मां के प्यार से की गई है कि जिस प्रकार ईश्वर से शान्ति मिलती है उसी प्रकार मां अपने बच्चों को शान्ति प्रदान करती है, इसलिए मां के आज्ञाकारी रह, उसका अनुसरण करते हुए किसी प्रकार का कष्ट माता को नहीं पहुंचाना चाहिए। मां का आंचल सुरक्षात्मक है, जो हर कठिनाई से उबारने में सक्षम है। मां के दर्शन मात्र से ही मानवता कृत-कृत हो उठती है। मां को हर स्तर पर मुसीबतें तो घेरती रहती हैं किन्तु उसका हृदय इतना विशाल है जो सदैव दुआ मांगने से पीछे नहीं हटता और हाथ आशीर्वाद देने से रुकता नहीं।

ख़बरनामा

युवकों को मार्ग पर लाने के लिए प्रयास अधीन
जत्थेदार अवतार सिंघ ने माता-पिता से सहयोग मांगा

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा युवकों में बढ रहे नशे के रुझान तथा पतितपन को रोकने के लिए जहां विशेष अभियान चलाया जा रहा है वहां अन्य प्रयासों के द्वारा भी युवकों को धर्म के साथ जोड़कर पतितपन से बाहर निकाला जा रहा है परंतु इस बात के लिए युवकों के माता-पिता के सहयोग की भी सख्त आवश्यकता है। उपर्युक्त विचार प्रस्तुत करते हुए जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि जब तक युवकों को सिखी के साथ जुड़ने, नशे छोड़कर गुरु साहिबान के दर्शाये मार्ग पर चलने की प्रेरणा घर से नहीं मिलती तब तक युवकों को मार्ग पर लाने के लिए किया जा रहा अथाह परिश्रम भी अधिक प्रभावशाली नहीं होगा। उन्होंने बातचीत करते हुए कहा कि नशों के जाल में फंस कर युवक गलत रास्ते पर पड़ जाते हैं जो उनको कई बार अपराध की दुनिया तक ले जाता है। उन्होंने कहा कि बच्चे के पहले गुरु के रूप में उसके माता-पिता ही क्रियाशील होते हैं और उनके दिये अच्छे संस्कारों, शिक्षा और परामर्श को अपना कर बच्चा राज्य में तो क्या पूरे देश में अपने माता-पिता का नाम चमकाने के योग्य बन जाता है। जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि शिरोमणि कमेटी की ओर से धर्म प्रचार के लिए विशेष प्रयास किये जा रहे हैं इसलिए कि धर्म से विमुख हो चुकी और हो रही युवा पीढ़ी को उचित मार्ग पर लाया जा सके। उन्होंने बताया कि इस प्रयास में अलग-अलग जगह धर्म प्रचारक भेजना, धार्मिक लिट्रेचर बांटना, सिख धर्म पर डाकूमेंटरी फिलमें बना कर लोगों को जागरूक करना विशेष हैं।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि शिरोमणि कमेटी के विकास को दर्शाती दस्तावेजी फिल्म भी तैयार हो चुकी है जो बहुत जल्द विभिन्न टी. वी. चेनलों पर श्रद्धालुओं के सम्मुख की जाएगी। उन्होंने कहा कि युवकों को नशों से दूर करने के लिए शिरोमणि कमेटी की तरफ से खालसायी खेल भी आयोजित किये जा रहे हैं।

शिरोमणि गु: प्र: कमेटी की तरफ से नन्ही छां अभियान हेतु
संगतों में छायादार एवं फलदार पौधे वितरित

अमृतसर : ३ अप्रैल- वातावरण की शुद्धता के लिए और प्रकृति का समतोल बनाने के लिए सहायक सिद्ध होते हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से श्री अनंदपुर साहिब, श्री दरबार साहिब श्री अमृतसर और श्री दरबार साहिब श्री मुक्तसर साहिब में नन्ही छां योजना अधीन छायादार एवं फलदार पौधे वितरित किये जा रहे हैं। नन्ही छां अभियान अधीन छायादार एवं फलदार पौधे तैयार करने के लिए गुरुद्वारा पातालपुरी साहिब में नर्सरी बनाई जा रही है। इस बात का प्रगटावा शिरोमणि गु: प्र: कमेटी के प्रधान जत्थेदार अवतार सिंघ ने यहां किया।

दो-वर्षीय सिख धर्म अध्ययन पत्राचार कोर्स का नतीजा घोषित

अमृतसर : ९ अप्रैल- सिख पंथ की शिरोमणि संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की धर्म प्रचार कमेटी द्वारा आरंभ किये गए दो-वर्षीय सिख धर्म अध्ययन पत्राचार कोर्स जो घर बैठे ही सिख धर्म की प्रारंभिक जानकारी देने के संबंध में आरंभ किया गया था तथा जिसकी परीक्षा फरवरी महीने में ली गई थी के प्रथम वर्ष की हुई परीक्षा का नतीजा आज घोषित कर दिया गया। परीक्षा की पास प्रतिशत ९४.४१ रही। परीक्षा में बैठे कुल ७३४ विद्यार्थियों में से ६९३ विद्यार्थियों ने यह परीक्षा पास की। बाबा आइआ सिंघ रिआड़की कॉलेज, तुगलवाल (गुरदासपुर) की छात्रा बीबा सुखमीत कौर (रोल नं: १३०३) ४०० में से ३५१ अंक प्राप्त करके प्रथम स्थान पर रही जबकि अमृतसर की बीबी जसविंदर कौर (रोल नं: २४५) ने ३४४ अंक प्राप्त करके दूसरा स्थान प्राप्त किया। अमृतसर के स. रणजीत सिंघ (रोल नं: ३७८) ३४३ अंक प्राप्त करके तीसरे स्थान पर रहे।

उपर्युक्त ३ छात्रों/छात्राओं सहित पहली दस पोजीशनें प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं के रोल नं: तथा प्राप्त अंकों का विवरण इस प्रकार है: २८७१ (३४२), १६७१ (३४१), २१५ (३४१), २१७ (३४१), २८४७ (३४१), १४२९ (३४०), २८४३ (३४०)

धर्म प्रचार कमेटी और शिरोमणि कमेटी के सचिव स. दलमेघ सिंघ ने पत्राचार कोर्स में से पास होने वाले छात्रों-छात्राओं की बधाई दी। इस कोर्स के निर्देशक डॉ. जसबीर सिंघ साबर ने बताया कि छात्रों को नतीजे-कार्ड डाक द्वारा भेज दिये गये हैं। अतिरिक्त जानकारी के लिए छात्र काम वाले दिनों में उनके साथ टेलीफोन नंबर ०१८३-२५५३९६२ पर प्रात: १०-०० बजे से सायंकाल ४-०० बजे तक संपर्क कर सकते हैं।

सी. बी. आई १९८४ में दिल्ली में हुए सिख जन-संहार के चश्मदीद साक्षी के बयान कलमबंद करे- वक्ता

अमृतसर : १२ फरवरी। सी. बी. आई द्वारा १९८४ में दिल्ली में सिख जन-संहार के कथित दोषी सज्जण कुमार के चश्मदीद गवाह स. हरिंदर सिंघ (कोहली) डेराबस्सी का बयान कलमबंद न किये जाने पर उस द्वारा शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को की गई शिकायत पर प्रतिक्रिया प्रक्ट करते हुए शिरोमणि कमेटी के वक्ता ने कहा कि यह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण और पीड़ितों को न्याय न देने के तुल्य है।

वक्ता ने यहां से जारी एक प्रेम रिलीज में कहा कि देश की सर्वोच्च जांच एजेंसी की ओर से यह अवेसलापन समझ से बाहर है और देरी से न्याय मिलना, न्याय न देने के तुल्य है। जबकि इस जन संहार से पीड़ित २५ वर्ष से अधिक समय से न्याय की प्रतीक्षा कर रहे हैं। वक्ता ने प्रधान मंत्री को अपील की कि स. हरिंदर सिंघ डेराबस्सी के बयान कलमबंद करने के लिए सी. बी. आई. को आदेश दिये जाएं इसलिए कि पीड़ितों को न्याय मिल सके।

प्रिंटर व पब्लिशर स. दलमेघ सिंघ ने गोल्डन आफसेट प्रेस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, अमृतसर से प्रकाशित किया।संपादक स. सिमरजीत सिंघ। प्रकाशित करने की तिथि : ०१-०५-२००९